ईश-सेविका माता मेरी बेर्नादेत्त प्रसाद किस्पोट्टा की आध्यात्मिकता

2 जून 1878-16 अप्रैल 1961

संस्थापिका

संत अन्ना की पुत्रियों का धर्मसंघ राँची

CS CamScanner

अगर ये मादर लोग यीसु के प्रेम से अपने प्यारे बाप, माँ, भाई बहिन, मित्र और कुटुम्बों को, हाँ अपने निज देश ही तक भी त्याग देकर, हमारे इस दूर जंगली देश में आकर हम अनजान गरीब और नीच जातियों को इतना प्रेम दुलार करके, हमारी आत्माओं को स्वर्ग में पहुँचाने के फिक्र से दिन-रात इतनी मिहनत किया करती हैं, तो क्या हम लोग भी इन्हों के सुन्दर नमूनों के अनुसार अपने देश और जातियों की भलाई के लिए नहीं करेंगी?

संस्मरण, पृष्ठ सं. 3

CamScanner

ईश-सेविका माता मेरी बेर्नादेत्त प्रसाद किस्पोट्टा की आध्यात्मिकता

2 जून 1878-16 अप्रैल 1961

संस्थापिका

संत अन्ना की पुत्रियों का धर्मसंघ राँची

CS CamScanner

© संत अन्ना की पुत्रियों का धर्मसंघ राँची

प्रथम संस्करण : 2025

प्रकाशक
संत अन्ना की पुत्रियों का धर्मसंघ राँची
संत अन्ना जेनेरालेट, लोवाडीह
पी. ओ. : नामकुम
जिला : राँची – 834010, झारखण्ड

CamScanner

विषय–सूची

प्राक्कथन		**3**
आभार		**5**
प्रस्तावना		**7**
भूमिका		**11**
अध्याय 1: माता मेरी बेर्नादेत्त की आध्यात्मिकता की मुख्य विशेषताएँ		**15**
1.1	खीस्त–केन्द्रित	15
1.2	धर्मग्रंथ संबंधी	17
1.3	पूजन–पद्धति–विषयक	19
1.4	मरिया–भक्ति	21
1.5	रखवाल दूत के प्रति विशेष भक्ति	23
1.6	आत्माओं के लिए उत्साह	24
1.7	दुनियावी चीजों के प्रति अनासक्ति	26
1.8	सब कुछ में ईश्वर की खोज	27
1.9	येसु के प्रेम से श्रेष्ठत्तर सेवा	29
1.10	येसु के प्रेम से प्रज्वलित	32
1.11	कृतज्ञता का भाव	34
1.12	मानव–केन्द्रित	38
1.13	निर्णय–क्षमता	40
1.14	दृढ़ संकल्प (बेर्नादेत्तीय संकल्प)	41
1.15	क्रूस के प्रति प्रेम	44
1.16	खीस्त के लिए प्रगाढ़ प्रेम	48

CamScanner

1.17 ईश्वर पर पूर्ण निर्भरता 49
1.18 आदिवासी संस्कृति से जुड़ाव 50
1.19 ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण 52
1.20 समूह–भावना 53
अध्याय 2: सुसमाचारी परामर्श और माता मेरी बेर्नादेत्त 55
2.1 शुद्धता 55
2.2 निर्धनता 56
2.3 आज्ञापालन 57
अध्याय 3: ईश्वरीय सद्गुण और माता मेरी बेर्नादेत्त 59
3.1 विश्वास 59
3.2 आशा 60
3.3 प्रेम 61
अध्याय 4: आधारभूत सद्गुण और माता मेरी बेर्नादेत्त 63
4.1 बुद्धिमत्ता 63
4.2 न्याय 64
4.3 धैर्य 65
4.4 संयम 66

CamScanner

प्राक्कथन

कोविड–19 महामारी के कारण संत अन्ना की पुत्रियों के धर्मसंघ राँची की 12वीं महासभा दो चरणों में संपन्न हुई। इसका पहला चरण 3 से 7 सितंबर 2020 तक हुआ, जिसका मुख्य उद्देश्य सुपीरियर जेनेरल और चार महासलाहकारिणियों का चुनाव था, जबकि दूसरा चरण 4 से 12 जनवरी 2021 तक हुआ जो व्यवसाय महासभा *(Business Chapter)* 2021 भी कहलाता है। इसका मुख्य उद्देश्य चारो प्रोविंसों से भेजे गए संपूर्ण धर्मसंघ के संकलित प्रस्तावों *(Postulates)* पर चर्चा करना था। इनमें से एक प्रस्ताव ईश–सेविका माता मेरी बेर्नादेत्त प्रसाद किस्पोट्टा की आध्यात्मिकता पर पुस्तक लिखना था। अतः, महासमिति ने इस पुस्तक को लिखने का काम पोस्टुलेटर डॉ. सि. मरियम अनुपा कुजूर, डी.एस.ए. और माता बेर्नादेत्त की धन्यता की प्रक्रिया की इंटर्नल टीम को सौंपा। प्रारंभ में स्व. फा. लीनुस कुजूर, ये.सं. को पुस्तक लिखने के लिए मार्गदर्शक के रूप में मनोनीत किया गया था, लेकिन उनकी असामयिक मृत्यु के कारण बाद में श्रध्देय फा. सुधीर कुमार कुजूर, ये.सं. को नये मार्गदर्शक के रूप में नियुक्त किया गया। इस प्रकार उनके मार्गदर्शन में पुस्तक लेखन का कार्य सम्पन्न हुआ।

मैं विशेष रूप से हमारी संस्थापिका माता बेर्नादेत्त के माध्यम से ईश्वर द्वारा प्रदान किए गए सभी अनुग्रहों और आशीर्वादों के लिए उनके प्रति अपनी खुशी और आभार व्यक्त करती हूँ। सौंपे गए कार्य को ईमानदारी और सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए सि. मरियम अनुपा कुजूर, डी.एस.ए. और इंटर्नल टीम के सदस्यों को हार्दिक धन्यवाद और बधाई देती हूँ। मैं श्रध्देय फा. सुधीर कुमार कुजूर, ये.सं. को भी माता बेर्नादेत्त की आध्यात्मिकता की पुस्तक लिखने में उनके प्रेमपूर्ण मार्गदर्शन के लिए दिल से धन्यवाद देती हूँ।

CamScanner

मुझे उम्मीद है कि यह प्रेरणादायक पुस्तक डी.एस.ए. धर्मसंघ की सभी धर्मबहनों और प्रशिक्षुओं को ईश–सेविका माता मेरी बेर्नादेत्त के उदाहरण के अनुसार येसु को और अधिक करीब से जानने, उसे और अधिक गहराई से प्यार करने तथा और अधिक निकटता से उसका अनुसरण करने में मदद और प्रेरित करेगी। हमारी संस्थापिका पवित्रता के मार्ग पर हमारा नेतृत्व और मार्गदर्शन करे। उनकी आध्यात्मिकता हमारे दैनिक जीवन में ईश्वर के साथ हमारे संबंधों को गहरा करने के लिए प्रेरणा का स्रोत बने।

शुभकामनाओं सहित,

सि. लीली ग्रेस तोपनो, डी.एस.ए.
सुपीरियर जेनेरल
संस्थापिका ईश–सेवक माता मेरी
बेर्नादेत्त किस्पोट्टा की 64वीं पुण्यतिथि

16 अप्रैल 2025

राँची

CamScanner

आभार

''असीम सर्वशक्तिमान, असीम दयालु ईश्वर के बड़े अचम्भित प्रेम का गुणगान कैसे करें''? (संस्मरण पृष्ठ 55)

सर्वप्रथम, मैं हमारी संस्थापिका, ईश–सेविका माता मेरी बेर्नादेत्त प्रसाद किस्पोट्टा की आध्यात्मिकता की इस पुस्तक को तैयार करने में सक्षम बनाने के लिए करूणामय ईश्वर को धन्यवाद देती हूँ। यह प्रभु की आत्मा ही है जिसने हमारी बहनों को इस पुस्तक के संबंध में एक पोस्टूलेट लिखने के लिए प्रेरित किया। यह अधिक उत्साह के साथ ईसा मसीह का अनुसरण करने और संस्थापिका के आदर्शों पर चलते हुए अपनी आध्यात्मिकता में और अधिक गहराई से बढ़ने की उनकी वास्तविक इच्छा को दर्शाता है।

मैं श्रध्देया सि. लीली ग्रेस तोपनो, डी.एस.ए., सुपीरियर जेनेरल तथा सभी महासलाहकारिणियों को मुझे एवं इंटर्नल टीम को माता बेर्नादेत्त की आध्यात्मिकता को लिपिबध्द करने का पवित्र कार्य सौंपने के लिए तहे दिल से धन्यवाद देती हूँ। ऐसा करने के दौरान, मैंने व्यक्तिगत रूप से पवित्र आत्मा की सक्रिय उपस्थिति के साथ–साथ माँ बेर्नादेत्त की ममतामयी संगति का अनुभव किया है। यद्यपि उनके अवर्णनीय ईश्वर–अनुभव को शब्दों में व्यक्त करना कठिन है, फिर भी उनके संस्मरण के प्रार्थनापूर्ण पाठ और चिंतन के माध्यम से उनकी आध्यात्मिकता के अथाह पहलुओं को समझने का मेरा यथासंभव प्रयास रहा है। इसके अतिरिक्त, सुपीरियर जेनेरल तथा महासलाहकारिणियों ने अपने निरंतर प्रोत्साहनों, बहुमूल्य सुझावों और प्रारूप में आवश्यक सुधारों के द्वारा बहुत योगदान दिया है। मैं उन सबकी आभारी हूँ।

मैं श्रध्देय फा. सुधीर कुमार कुजूर, ये.सं. के प्रति इस पुस्तक को लिखने में उनकी उदारता और प्रेमपूर्ण मार्गदर्शन के लिए अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ। दी गई लेखन–सामग्रियों को ध्यानपूर्वक

CamScanner

पढ़कर और सावधानीपूर्वक सुधारकर उन्होंने मुझे इस पुस्तक को व्यवस्थित रूप से तैयार करने में सक्षम किया है। उन्हें दिए गए कार्य को पूरा करने के लिए उनकी उपलब्धता और समर्पण की मैं गहराई से सराहना करती हूँ।

मैं इंटर्नल टीम के सभी सदस्यों को भी उनके प्रार्थनापूर्ण सहयोग और प्रोत्साहन के लिए हार्दिक धन्यवाद देती हूँ। मैं सभी डी.एस.ए. धर्मबहनों के प्रति भी उनकी प्रार्थनाओं और शुभकामनाओं के लिए आभार व्यक्त करती हूँ। मुझे विश्वास है कि 12वीं महासभा का यह साधारण मगर अनमोल उपहार हममें से प्रत्येक के लिए हमारे धर्मसंघीय जीवन में आगे बढ़ने हेतु हमेशा प्रेरणा का स्रोत रहेगा। ईश्वर हम सभी को आशीर्वाद दे और माता बेर्नादेत्त हमारी आध्यात्मिक यात्रा में हमारा साथ दे।

शुभकामनाओं सहित,

सि. मरियम अनुपा कुजूर, डी.एस.ए.

पोस्टूलेटर

CamScanner

प्रस्तावना

मनुष्य न केवल शरीर से बल्कि आत्मा से भी बना है और यह अनिवार्य रूप से सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक आदि विभिन्न आयामों से प्रभावित होता है। अतः, किसी व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए केवल भौतिक आवश्यकताएँ ही पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि आध्यात्मिक आवश्यकताएँ भी उतनी ही महत्वपूर्ण हैं। वास्तव में, आध्यात्मिक तुष्टि के बिना मनुष्य अधूरा ही रहता है, जैसा कि हिप्पो के संत अगुस्टीन कहते हैं, ''हे ईश्वर, हमारे हृदय आपके लिए बने हैं, और वे तब तक बेचैन रहते हैं जब तक वे आप में आराम नहीं कर लेते।'' इसी तरह, गौतम बुद्ध भी पुष्टि करते हैं, ''जिस तरह मोमबत्ती आग के बिना नहीं जल सकती, उसी तरह मनुष्य आध्यात्मिक जीवन के बिना नहीं जी सकते।'' ईश्वर ने मानव जाति को अपना प्रतिरूप बनाया (उत्पत्ति 1:27), जिसका अर्थ है कि मानव जाति को ईश्वर से जुड़ी विशेष प्रकृति प्रदान की गई है। फलस्वरूप व्यक्ति में मानवीय कमजोरियों के साथ–साथ दैवी गुण भी विद्यमान होते हैं। इसलिए, वह अपने पापी स्वभाव के बावजूद लगातार पवित्र बने रहने का प्रयास करता है। ईश्वर ने स्वयं आज्ञा दी, ''पवित्र बनो, क्योंकि मैं प्रभु, ईश्वर पवित्र हूँ'' (लेवी 19:2)।

आध्यात्मिकता की अवधारणा ख्रीस्तीय धर्म के अंतर्गत उत्पन्न हुई। यह शब्द लैटिन संज्ञा स्पिरिचुअलितास का अनुवाद करता है, जो विशेषण स्पिरिचुअलिस (आध्यात्मिक) से जुड़ा है। ये ग्रीक संज्ञा न्यूमा (आत्मा) और विशेषण न्यूमेटिकोस से आते हैं। ख्रीस्तीय जीवन शिष्यता या ख्रीस्त का अनुसरण करते हुए ख्रीस्त जैसा जीवन जीना है। इसलिए ख्रीस्तीय आध्यात्मिकता को भक्तिमय अभ्यासों या अमूर्त सिद्धांतों तक ही सीमित नहीं किया जा सकता है। इसका तात्पर्य है– आत्मा द्वारा संचालित जीवन जीने की शैली। शिष्यता के आह्वान का तात्पर्य है–

CamScanner

ईश्वर के राज्य की स्थापना के लिए येसु के कार्य में भागीदारी। संत मत्ती शिष्य के कार्यों को इस प्रकार इंगित करते हैं– सुसमाचार का प्रचार करना, रोगियों को चंगा करना, मुर्दों को जिलाना, कोढ़ियों को शुद्ध करना, नरकदूतों को निकालना (मत्ती 10:7–8)। येसु के कार्य और जीवन में भागीदारी की यह प्रक्रिया दूसरों के प्रति निःस्वार्थ सेवा (मारकुस 9:35) या प्रेम के खातिर किसी के जीवन को त्याग देने की धारणा से भी जुड़ी हुई है (योहन 15:12–13)। दरअसल, राज्य की घोषणा करने के आह्वान को केवल ईश्वर के बारे में जानकारी देना या नैतिक शिक्षाओं के मौखिक संचार के रूप में समझना बहुत संकीर्ण है। येसु के मार्ग की घोषणा करना प्रारंभ से ही येसु ख्रीस्त के अनुसार जीने के तरीके के रूप में समझा गया था। इस प्रकार, ख्रीस्तीय एक ''जीवित संदेश'' बनकर येसु के मिशन का विस्तार करते हैं, इस माध्यम से कि वे किस प्रकार के लोग हैं और वे दुनिया में कैसे कार्य करते हैं (2 कुरिन्थ. 3:3)। दूसरे शब्दों में, मिशन ख्रीस्तीय आध्यात्मिकता का अभिन्न अंग है।

ख्रीस्तीय धर्म मिशन–केंद्रित है। अर्थात् ख्रीस्तीय जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है– ईश्वर की रचनात्मकता, सक्रिय भलाई, मेल–मिलाप, चंगााई और प्रेम के कार्यों की घोषणा द्वारा एक बेहतर दुनिया बनाने में ईश्वर के मिशन में भाग लेना है, जो मानवता को उसके अंतिम लक्ष्य तक पहुँचने में सक्षम बनाने की दिशा में निर्देशित है। यह बहिर्मुखी दृष्टिकोण दूसरों की जरूरतों का प्रत्युत्तर देना चाहता है। यह मात्र धार्मिक क्रियाकलापों से परे व्यापक सामाजिक परिवर्तन को अपनाते हुए ''मिशन'' की धारणा का विस्तार करता है। येसु ख्रीस्त का संदेश माँग करता है कि शिष्य गरीबों और हाशिये पर पड़े लोगों की जरूरतों पर ध्यान दें और उनकी आवाज को सुनने में सक्षम बनें।

CamScanner

आध्यात्मिकता एक मूल तत्व है जिसे प्रत्येक मनुष्य इस भौतिकवादी दुनिया में अपने अस्तित्व को सही अर्थ देने के लिए अपने जीवनकाल में प्राप्त करने का प्रयास करता है। कुछ लोगों के लिए, आध्यात्मिकता एक ऐसी चीज है जो उन्हें ब्रह्मांड में सर्वज्ञ शक्ति, अर्थात् ईश्वर से जोड़ती है। उनके लिए ईश्वर ही उनकी सभी समस्याओं का अंतिम समाधान है। जबकि दूसरों के लिए, आध्यात्मिकता की अवधारणा ध्यान, योग, लंबी सैर या किसी चीज के शाँत चिंतन में अपना अस्तित्व पाती है। लेकिन हमें आध्यात्मिकता की अवधारणा को समझने की जरूरत है। यह केवल धार्मिकता या ध्यान या लंबी सैर तक ही सीमित नहीं है। यह एक व्यापक शब्द है जिसमें जीवन की कई अन्य धारणाएँ समाहित हैं। समय के साथ–साथ अध्यात्म की परिभाषा भी बदल गई है। आध्यात्मिकता एक तथ्य के सार की तरह है जो मनुष्य को अपने जीवन की सच्चाई की खोज करने, अपने जीवन को एक अर्थ देने, अपने अस्तित्व का उद्देश्य खोजने, अनंत के बारे में उत्तर खोजने और सबसे महत्वपूर्ण रूप से उस रिश्ते को अर्थ देने के लिए मजबूर करता है जो उसे किसी ऐसी चीज से जोड़ता है जो उससे कहीं अधिक महान और श्रेष्ठ है। यह एक ऐसी चीज है जो अन्य प्राणियों और ब्रह्मांड के साथ भी हमारे संबंधों में सामंजस्य स्थापित करता है। यह एक ऐसी चीज भी है जो हममें सभी को समान करुणा के साथ देखने का दृष्टिकोण विकसित करती है। आध्यात्मिकता अपेक्षा करती है कि व्यक्ति सब कुछ देखे, सब कुछ सुने लेकिन अपने अंतःकरण के अनुसार ही कार्य करे। ईश–सेविका माता मेरी बेर्नादेत्त प्रसाद किस्पोट्टा ने अपने जीवन में यही किया।

जिस प्रकार लोयोला के संत इग्नासियुस की ''आध्यात्मिक साधना'' इग्नाशियन आध्यात्मिकता की विशेषता दर्शाती है, उसी प्रकार माता बेर्नादेत्त का ''संस्मरण'' भी उनकी आध्यात्मिकता को व्यक्त करता है। यह पुस्तक माता बेर्नादेत्त की आत्मकथा, संस्मरण के आधार

CamScanner

पर उनकी आध्यात्मिकता की मूलभूत विशेषताओं को चित्रित करने का एक विनम्र प्रयास है। इसे चार अध्यायों में विभाजित किया गया है और प्रत्येक अध्याय में माता बेर्नादेत्त के वर्गीकृत विशिष्ट गुणों का विस्तार से वर्णन किया गया है। उम्मीद है, माता बेर्नादेत्त की आध्यात्मिकता पर रचित यह पुस्तक पाठकों, विशेष रूप से संत अन्ना की पुत्रियों को उनकी आध्यात्मिकता को बेहतर ढंग से समझने और उनकी प्यारी संस्थापिका की तरह ख्रीस्त की अंतरंग अनुयायी बनकर आध्यात्मिकता को गहरा करने में मदद करेगी।

माता बेर्नादेत्त की धन्यता की
प्रक्रिया की इन्टर्नल टीम

CamScanner

भूमिका

ख्रीस्तीय आध्यात्मिकता का अस्तित्व और विस्तार छोटानागपुर की धरती पर 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में बेल्जियम के जेसुइट मिशनरियों के आगमन के साथ हुआ। ईश सेवक फा. कॉन्स्टंट लीवन्स, ये.सं. 17 मार्च 1885 में राँची आए। बाद में कई अन्य बेल्जियन जेसुइट मिशनरियों ने उनका अनुकरण करते हुए स्वयं को सुसमाचार प्रसारण के काम में समर्पित कर दिया। आयरलैंड की लोरेटो (आई.बी.भी.एम.) और टिल्डोंक की उर्सुलाइन (ओ.एस.यू.) धर्मबहनों ने छोटानागपुर में सुसमाचार प्रसारण के साथ–साथ शिक्षा के काम में मिशनरियों का हाथ बंटाया। उन्होंने लड़कों और लड़कियों दोनों के लिए स्कूल खोले और कुछ विद्यार्थियों को छात्रावास में रखा। धर्मशिक्षा एवं स्कूल में पढ़ाई के अतिरिक्त, विद्यार्थीगण विभिन्न गतिविधियों में शामिल होते थे जिससे उन्हें अपनी प्रतिभा और व्यक्तित्व विकसित करने में मदद मिली। अन्य लड़कियों की तरह माता मेरी बेर्नादेत्त को भी एक छात्रा के रूप में लोरेटो मादरों के साथ उनके छात्रावास में रहने का अवसर मिला। वे 1890 में बारह साल की उम्र में राँची के लोरेटो कॉन्वेंट में आईं। तत्पश्चात्, उन्होंने ईश्वर की पुकार सुनी और ईश्वरीय बुलाहट का छोटा बीज उनके उपजाऊ दिल में लगातार बढ़ता गया।

डी.एस.ए. आध्यात्मिकता: इग्नाशियन आध्यात्मिकता की तर्ज पर, डी.एस.ए. आध्यात्मिकता भी ख्रीस्त–केंद्रित, धर्मग्रंथ संबंधी एवं पूजन–पद्धति–विषयक है।[1] इन विशेषताओं का पालन करते हुए, उन सबों की तरह जो सुसमाचारी सलाहों का व्रत लेते हैं, डी.एस.ए. धर्मबहनें सबसे बढ़कर ईश्वर को खोजतीं और प्यार करती हैं।[2] ईशवचन के पठन और मनन द्वारा वे ख्रीस्त का सम्पूर्ण अनुपम ज्ञान

1 संत अन्ना की पुत्रियों के धर्मसंघ का संविधान, (संविधान) नं. 33

2 संविधान, नं. 33; पी.सी. 5 ए

CS CamScanner

प्राप्त करती हैं।[3] इसी तरह, वे प्रतिदिन सक्रिय रूप से और भक्तिपूर्वक पवित्र पूजन–पद्धति में भाग लेती हैं, विशेष रूप से पवित्र यूखरिस्त में।[4] डिवाइन ऑफिस या प्रातः वंदना (लॉड्स) और संध्या वंदना (वेस्पर्स) प्रतिदिन एक साथ करती हैं।[5] वे मध्याह्न प्रार्थना तथा रात्रि वंदना से पहले अंतःकरण की जाँच करती हैं। वे अपनी आत्मा को निर्मल रखने के लिए नियमित रूप से अंतःकरण की जाँच करती हैं।[6]

माता बेर्नादेत्त की आध्यात्मिकता: माता बेर्नादेत्त की आध्यात्मिकता विभिन्न प्रकार के आंतरिक एवं बाह्य संघर्षों के द्वारा गहरी हुई थी। लोरेटो स्कूल में दाखिला पाने से पहले, वे एक लूथरन पादरी की देखरेख में लूथरन स्कूल में पढ़ रही थीं। फलस्वरूप, लूथरन चर्च में उनकी आस्था दिन–ब–दिन बढ़ती जा रही थी जबकि वे कैथोलिक विश्वास और कैथोलिक पुरोहितों से अनभिज्ञ थीं। लेकिन धीरे–धीरे वास्तविक कलीसिया को पहचानने के बाद, उन्होंने अंततः कैथोलिक विश्वास को स्वीकार कर लिया और 31 जुलाई 1890 में कैथोलिक कलीसिया में बपतिस्मा ग्रहण किया।

लोरेटो धर्मबहनों के साथ रहने के दौरान, माता बेर्नादेत्त और उनकी तीन सहेलियाँ– माता बेरोनिका, माता सिसिलिया और माता मेरी उनके अनुकरणीय जीवन से गहराई से प्रभावित हुईं। इन चारों लड़कियों ने सोचा– ''अगर ये मादर लोग येसु के प्रेम से अपने प्यारे बाप, माँ, भाई, बहन, मित्र और कुटुम्बों को, हाँ अपने निज देश ही तक भी त्याग देकर, हमारे इस दूर जंगल भरे देश में आकर हम अनजान, गरीब और नीच जातियों को इतना प्रेम दुलार करके, हमारी आत्माओं को स्वर्ग में पँहुचाने के फिक्र से दिन–रात इतनी मिहनत किया करती हैं, तो क्या हम लोग भी इन्हों के सुन्दर नमूनों के अनुसार अपने देश

3 संविधान, नं. 34; फिलि. 3:8; पी.सी. 6 बी

4 संत अन्ना की पुत्रियों के धर्मसंघ की संशोधित निर्देशिका, (निर्देशिका) नं. 44 घ

5 संविधान, नं. 35; निर्देशिका, नं. 44 बी

6 संविधान, नं. 45; निर्देशिका, नं. 44 छ

CamScanner

और जातियों की भलाई के लिए नहीं करेगी?"[7] इस प्रकार, ईश्वरीय बुलाहट की पहली चिनगारी उनके दिलों में जली। ईश्वर और उनके लोगों की सेवा करने के लिए, वे विवाह के परित्याग सहित सब कुछ त्यागने के लिए दृढ़निश्चयी थीं। माता बेर्नादेत्त की आध्यात्मिकता में उनके आध्यात्मिक गुणों के साथ–साथ वीरोचित सद्‌गुण भी शामिल हैं जो उन्हें ईश्वर से अद्वितीय उपहार स्वरूप प्राप्त हुए थे।

7 किस्पोट्टा, सि. अन्ना मेरी बेर्नादेत्त का संस्मरण, 3

CamScanner

प्रेम सेवा समर्पण

CamScanner

अध्याय 1

माता मेरी बेर्नादेत्त की आध्यात्मिकता की मुख्य विशेषताएँ

1.1 ख्रीस्त–केन्द्रित : ख्रीस्त स्वयं माता बेर्नादेत्त के जीवन के केंद्र थे। येसु ही उनके सर्वस्व बन गए थे। वे येसु के लिए कुछ भी करने को तत्पर थीं। संत पौलुस की तरह उन्होंने येसु ख्रीस्त के बहुमूल्य ज्ञान के कारण हर वस्तु को हानि समझा। उन्होंने ख्रीस्त को पाने के लिए सभी चीजों को कूड़ा समझकर उन्हें छोड़ दिया।[1] उन्होंने दुनियावी दूल्हे के बजाय येसु को अपने दिव्य दूल्हे के रूप में चुना। ख्रीस्त की दुल्हन बनने के लिए उन्होंने शादी करने से इनकार कर दिया।[2] 31 जुलाई 1890 में काथोलिक धर्म में मेरी बेर्नादेत्त के रूप में नामकरण से पहले, उन्हें 9 जून 1878 को लूथरन चर्च में ख्रीस्त आनंदित रूथ के रूप में बपतिस्मा दिया गया था, जो येसु ख्रीस्त के नाम से जुड़ा है।[3] जाहिर है, अपने पहले नाम के अनुसार, वे हमारे प्रभु ख्रीस्त की एक वफादार अनुयायी थीं।

उल्लेखनीय है कि माता मेरी बेर्नादेत्त के संयुक्त परिवार में दो और व्यक्ति थे जिनके नाम येसु ख्रीस्त से जुड़े थे। सर्वप्रथम पूरन प्रसाद के दूसरे भाई प्रभु प्रसाद की पत्नी ख्रीस्तकिला थीं। वे कृपा की माँ थीं जो बाद में माता बेरोनिका बनीं। इसलिए, ख्रीस्तकिला को ख्रीस्त आनंदित रूथ बड़ी माँ (प्रभु प्रसाद की पत्नी) के रूप में संबोधित करती थीं। जाहिर है, उन दोनों के बीच स्नेह भरा रिश्ता था। दूसरे स्थान में, सुशीला (माता सिसिलिया) के छोटे भाई ख्रीस्तोफर थे जो पूरन प्रसाद और उनकी दूसरी पत्नी मार्ग्रेट से जन्म लिए थे। इस प्रकार, ख्रीस्तोफर ख्रीस्त आनंदित रूथ का सौतेला भाई था जो उनसे बहुत प्यार करता था। इस प्रकार, बचपन से ही परिवार के धार्मिक

1 फिलि. 3:8

2 संस्मरण, 36

3 संस्मरण, 22

CamScanner

माहौल ने उनके जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिससे वे येसु ख्रीस्त को पहचान सकीं और उनके प्रेम में और अधिक विकसित हो सकीं।

जैसा कि येसु के पवित्र नाम का अर्थ है – उद्धारकर्ता, माता बेर्नादेत्त और उनकी प्रथम साथियों को उद्धारकर्ता के रूप में येसु का गहरा अनुभव था। उदाहरण के लिए, यह जानकर कि जिस व्यक्ति के साथ उसके माता–पिता ने बेरोनिका से शादी करने का अनुरोध किया था, वह पागल हो गया और एक वर्ष के भीतर उसकी मृत्यु हो गई, माता बेर्नादेत्त ने व्यक्त किया, ''हमलोगों ने ईश्वर को खूब–खूब धन्यवाद दिया क्योंकि वह बहन बेरोनिका को ऐसी शोकमय दशा से मुक्त किया है।''[4] मूसलाधार बारिश के कारण पूरे उफान पर नदी को पार करने के दौरान, माता बेर्नादेत्त, माता सिसिलिया और माता मेरी ने नाविक के माध्यम से ईश्वर की मदद और उनकी सुरक्षा को देखा।[5] इसी तरह, रात में अकेली बीमार लड़की और लाशों की रखवाली करते समय, माता बेर्नादेत्त ने रखवाल दूतों के माध्यम से ईश्वर की बचाव–शक्ति का अनुभव किया, जैसा कि वे लिखती हैं, ''हमलोग सब बड़ी खुशी से संत रखवाल दूतों को बहुत–बहुत धन्यवाद दी हैं क्योंकि उन्हें सब नुकसानी से बचा रखे हैं।''[6] इसके अलावा, अपने पिता से बच निकलने के बाद उन्होंने पवित्र संस्कार के सामने ईश्वर के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त की, ''लड़की भागती–भागती चली आई और चार बजे के पीछे कोन्वेंट पहुँचकर गिर्जा में पवित्र साक्रमेंट के सामने घुटनों के बल गिरकर आँसू बहाती हुई येसु को बहुत–बहुत धन्यवाद दी।"[7]

उपरोक्त सभी घटनाएँ इस बात की साक्षी हैं कि माता बेर्नादेत्त का जीवन ख्रीस्त–केन्द्रित था। सभी परिस्थितियों में वे दाखलता और उसकी डालियों की तरह आध्यात्मिक रूप से ख्रीस्त के साथ जुड़ी थीं

4 संस्मरण, 23

5 संस्मरण, 25

6 संस्मरण, 28

7 संस्मरण, 37

CamScanner

और उन्होंने सब कुछ उन्हीं के लिए किया। उनके विचार, वचन और कार्य ख्रीस्त की आत्मा द्वारा ही संचालित थे। अतः, संत पौलुस के शब्दों को उनके जीवन पर भी लागू किया जा सकता है, ''मेरे लिए तो जीवन है मसीह और मृत्यु है उनकी पूर्ण प्राप्ति।''[8] उसका जीवन ख्रीस्त से इतना भरा हुआ था कि वे पुनः संत पौलुस की तरह कह सकती थीं, ''मैं अब जीवित नहीं रहा, बल्कि मसीह मुझमें जीवित हैं।''[9]

1.2 धर्मग्रंथ संबंधी : ईश्वर का जीवंत वचन माता बेर्नादेत्त की शक्ति का स्रोत था। वे ईश्वर के वचन से प्रबुद्ध और प्रेरित थीं जिसने उनके जीवन के हर कदम पर उनका मार्गदर्शन किया। बहुधा उन्होंने अपने संस्मरण में बाइबिल के वचनों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उद्धृत किया है। उदाहरण के लिए, रेभ. फा. अल्फोंस स्कार्लाकन, ये.सं. की प्रेमपूर्ण देखभाल के संबंध में उन्होंने लिखा है, "जैसे मुर्गी अपने छोटे–छोटे चेंगनों (चूजों) को सब प्रकार के जोखिमों से बचाने के वास्ते अपने डैनों तले लुकाकर (छुपाकर) बचाती है उसी भाँति वे हमारी रक्षा और पालन–पोषण किये हैं अपने मरण तक।"[10] उसी तरह उन्होंने फा. फ्रेड्रिक पील, ये.सं. पर ईशवचन लागू करते हुए कहा, "उसकी छाया में हमलोग थीं जैसे मुर्गी के डैनों तले उसके छोटे चेंगने (चूजे)।"[11] उनकी बुलाहट की पहली प्रेरणा ही हमें इब्राहीम के बुलावे की याद दिलाती है जो अपना देश, कुटुम्ब और अपने पिता का घर छोड़कर उस देश में गया था जहाँ प्रभु ने उसे दिखाया था।[12] माता बेर्नादेत्त ने वर्णन किया है कि 6 फरवरी 1899 को, डी.एस.ए. धर्मसंघ की चार अग्रदूतों के नवशिष्यालय में प्रवेश एवं व्रतधारण समारोह के दिन, लोरेटो मादर तेरेसा बेहद खुश थीं और उन्होंने बेर्नादेत्त को अपनी बाहों में लेकर बूढ़े सिमयोन की तरह बोल उठीं, "हे प्रभु, अब मुझ अपनी गरीब दासी को खुशी से मरने दीजिए, क्योंकि अब मैं अपनी निज आँखों से आपके अद्भुत प्रेम का फल देख पाई हूँ। मैं

8 फिलि. 1:21

9 गला. 2:20

10 संस्मरण, 58

11 संस्मरण, 68

12 उत्पत्ति 9:1–9; संस्मरण, 3

CS CamScanner

देखती हूँ कि आप इस जंगली देश की लड़कियों के बीच में से भी अब अपनी प्यारी दुल्हिन होने के लिए चुन लिए हैं।"[13]

प्रथम व्रतधारण के शुभ अवसर पर, पायनियर माताओं की कृतज्ञता की अभिव्यक्ति माँ मरियम के मरिया–भजन के समान थी।[14] इसी भाँति, डी.एस.ए. धर्मसंघ की रजत जयंती के दिन, माता बेर्नादेत्त ने सभी पुरोहितों, मादरों और उपकारकों के प्रति अपना आभार निम्नलिखित शब्दों में व्यक्त किया है: ''तुमने जब–जब मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से एक के साथ ऐसा किया, तब–तब मेरे ही साथ ऐसा किया।"[15] वे पुनः कहती हैं, ''जब वह एक प्याला भर कच्चा पानी के लिए स्वर्ग सुख देने का करार करता है, तो क्या वह आप लोगों के इतने दया के कामों के लिए कितना और अधिक न देगा?''[16] फा. फ्रेड्रिक पील, ये.सं., उनके गुरु पिता की मृत्यु पर उन्होंने उनके लिए पवित्र धर्मग्रंथ के वचनों को फिर से उद्धृत किया है: "हे भले और विश्वास योग्य नौकर! जब कि तू थोड़े कुछ में विश्वास योग्य निकला, तो मैं तुझे बहुत कुछ पर प्रधान करूँगा। अपने स्वामी के आनन्द का भागी हो जा।"[17] इस प्रकार, संस्मरण में माता बेर्नादेत्त द्वारा उद्धृत विभिन्न बाइबिल वचनों से संकेत मिलता है कि उनकी आध्यात्मिकता ईश्वर के वचन द्वारा संचालित थी। उनका हृदय 'बोने वाले के दृष्टान्त' की अच्छी भूमि के समान था, जिसमें बीज उगकर फले–फूले और तीस गुना या साठ गुना या सौ गुना फल लाये।[18]

डी.एस.ए. धर्मबहनें अपने दैनिक जीवन में ईश–वचन पर विशेष ध्यान देती हैं और मनन–चिंतन के लिए कम से कम 30 मिनट समर्पित करती हैं।[19] उनका धर्मसंघीय सामुदायिक जीवन धर्मग्रंथ और

---

13 लूक. 2:29–32; संस्मरण, 52

14 लूक. 1:46–55; संस्मरण, 55

15 मत्ती 10:43; संस्मरण, 65

16 मार. 9:41; संस्मरण, 65

17 लूक. 16:10; संस्मरण, 70

18 मार. 4:8

19 संविधान, नं. 44

CamScanner

पूजनविधि, विशेषकर पवित्र यूखरिस्त से पोषित होता है।[20] प्रतिदिन वे पंद्रह मिनट तक व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से आध्यात्मिक पाठ के साथ–साथ बाइबिल पठन भी करती हैं।[21] इस प्रकार, धर्मसंघीय जीवन के मार्ग को रोशन करने के लिए ईश्वर का वचन उनके कदमों के लिए दीपक बन जाता है।

1.3 पूजन–पध्दति–विषयक : जैसे पवित्र यूखरिस्त ख्रीस्तीय जीवन का स्रोत और शिखर है, वैसे ही यह माता बेर्नादेत्त का भी था। यूखरिस्तीय प्रभु के प्रति उनकी गहरी भक्ति थी। अपने क्रोधित पिता से भाग निकलने के बाद लोरेटो मादरों के गिरजा घर में पवित्र संस्कार के सामने घुटने टेकना और प्रार्थना करना यूखरिस्तीय प्रभु में उनके पूर्ण विश्वास का सबसे अच्छा उदाहरण है।[22] अपने दिल में वे आश्वस्त थीं कि ''नश्वर लोगों पर भरोसा रखने की तुलना में ईश्वर की शरण लेना बेहतर है।''[23] वे जीवन की चुनौतियों में सफलता के लिए यूखरिस्तीय बलिदान और जेसुइट पुरोहितों की प्रार्थनाओं को श्रेय देती हैं, जैसा कि वे कहती हैं, ''उन सब प्यारे फादरों को, जो इसकी पूर्त्ति के लिए अपने तेज प्रार्थना, स्वदण्ड और भी पवित्र मिस्सा के बलिदान चढ़ाकर हमलोगों के लिए यह अनमोल कृपादान कमाये हैं उन्हें यथाशक्ति दिलोजान से करोड़ों करोड़ धन्यवाद देती हैं।''[24] माता बेर्नादेत्त और उनकी साथियों ने जेसुइट फादरों के निर्देशों के माध्यम से पवित्र यूखरिस्त की शक्ति में अपना विश्वास गहरा किया; उन्होंने हमेशा उन्हें अपने काथोलिक विश्वास में मजबूत रहने के लिए प्रोत्साहित किया। इससे पहले कि तीनों लड़कियाँ अपने पिता पूरन प्रसाद के आदेश पर अनिच्छा से स्कूल से अपने घर के लिए रवाना हुईं, धर्मोपदेशक फादर ने उनसे कहा, "देखिए प्यारी लड़कियो, बड़े फादर ने तुमलोगों के विषय में हम सब फादरों को बतलाया और उसने हुक्म दिया कि पवित्र मिस्सा और विनती जो रोज–रोज

20 संविधान, नं. 53

21 निर्देशिका, नं. 44 ङ

22 संस्मरण, 37

23 स्तोत्र 118:8

24 संस्मरण, 40

CamScanner

पादरियों को करने का भारी हुक्म है उसे करें और कुछ स्वदण्ड लेवें ऐसे कि आपलोग इसी परीक्षा से जीत विजय पावें।''[25]

माता बेर्नादेत्त काथोलिक धर्म स्वीकार करने से पहले भी काथोलिक गिरजा जाया करती थीं, जब वे छुट्टियों के दौरान घर पर होती थीं, जैसा कि वे स्वयं करती हैं, ''इन्हीं दिनों में कभी–कभी काथोलिक गिरजा में पवित्र मिस्सा के वास्ते आई।''[26] सौभाग्य से, पवित्र यूखरिस्तीय समारोह के दौरान ही वे लूर्द की माता मरियम की सुन्दर मूर्त्ति को देखकर काथोलिक विश्वास के बारे में आश्वस्त हुईं और तत्पश्चात् उनके जीवन में आंतरिक परिवर्तन हुआ। उनके ही शब्दों में, ''दूसरी बार जब फिर पवित्र मिस्सा के लिए गिरजा आई तो लूर्द की निष्कलंक मरिया की मूर्त्ति पर ध्यानपूर्वक दृष्टि डाल के मोहित हो गई।''[27]

जहाँ तक संत अन्ना की पुत्रियों की प्रेरिताई की बात है, सुसमाचार प्रचारण उनका प्रमुख प्रेरिताई कार्य रहा है जो संस्कारों और विभिन्न पूजन–विधियों पर केंद्रित है जैसा कि माता बेर्नादेत्त ने संस्मरण में पुष्टि की है, ''वहाँ जेसुइट फादरों की रक्षा में लड़कियों के लिए स्कूल और स्त्रियों तथा वयस्क महिलाओं को धर्म की शिक्षा दिया करती हैं। उन्हें बपतिस्मा, पापस्वीकार, पवित्र कोम्युनियो तथा विवाह साक्रमेंत इत्यादि ठीक से लेने को तैयार करती हैं।''[28] इसके अतिरिक्त, 25 नवंबर 1922 को धर्मसंघ की रजत जयंती तथा 27 मई 1926 को उनके प्रथम व्रतधारण की रजत जयंती जैसे कुछ शुभ अवसरों पर भक्तिपूर्ण पवित्र मिस्सा एवं समारोही बेनेदिक्शन का भी उल्लेख है।[29] ''बड़ी गिरजा में बड़ा पवित्र मिस्सा का बलिदान चढ़ाया गया

---

25 संस्मरण, 30–31

26 संस्मरण, 20

27 संस्मरण, 21

28 संस्मरण, 60

29 संस्मरण, 63, 66. दरअसल 26 जुलाई 1922 में ही डी.एस.ए. धर्मसंघ की स्थापना के 25 साल पूरे हो चुके थे लेकिन अपरिहार्य कारण से इसे 25 नवंबर 1922 को मनाया गया। इसी तरह, 8 अप्रैल 1926 में चार प्रथम माताओं के प्रथम व्रतधारण के 25 साल पूरे हो चुके थे लेकिन यह 27 मई 1926 को मनाया गया।

CamScanner

है। हमलोग दोनो अपनी मन्नतें दुहराई हैं।''[30] चारों अग्रणी माताओं का जीवन उनकी मृत्यु तक पवित्र संस्कारों पर केंद्रित था। माता बेरोनिका और माता मेरी के बारे में माता बेर्नादेत्त ने इसका जिक्र किया है, ''अपने होश में रहते ही बड़ी भक्ति और प्रेम से पापस्वीकार, अन्तमलन और पवित्र कोमून्योन ग्रहण करके खूब भरोसे के साथ अपने अति प्राण प्यारे स्वर्गीय दूल्हे येसु ख्रीस्त में वे दोनो बड़े चैन और शाँति से सो गई हैं।''[31] माता बेर्नादेत्त के संस्कारिक जीवन की पुष्टि करने वाले गवाहों में से एक का कहना है, ''वे बारंबार प्रार्थनाएँ करती थीं, पापस्वीकार संस्कार एवं पवित्र परमप्रसाद ग्रहण करती थीं मानो कि ये उनके जीवन के अंतिम कार्य थे। पवित्र परमप्रसाद ग्रहण करने के बाद वे इतनी तन्मयता से प्रार्थना करती थीं मानो वे येसु से आमने–सामने मिल रही हों।''[32]

वर्तमान में संत अन्ना की पुत्रियाँ भी अपने दैनिक जीवन में पवित्र संस्कारों को प्राथमिकता देती हैं। ''हमारी पूजन–पद्धति–विषयक प्रार्थनाएँ हमारे जीवन में प्रथम स्थान रखती हैं, विशेषतः यूखरिस्तीय समारोह, जो सामुहिक रूप से दिन की आह्निका प्रार्थना द्वारा पूर्ण होती है।''[33] ''हम बहुधा पापस्वीकार संस्कार ग्रहण करतीं, पापमोचक एवं आध्यात्मिक निर्देशन के चयन के संबंध में हमें स्वतंत्रता प्रदान की गई है।''[34]

1.4 मरिया–भक्ति : जैसे लोयोला के संत इग्नासियुस की मोन्सेर्रात की माता मरियम के प्रति विशेष भक्ति थी, वैसे ही माता बेर्नादेत्त की भी लूर्द की माता मरियम के प्रति गहरी भक्ति थी। वास्तव में, यह लूर्द की माता मरियम की खूबसूरत मूर्ति ही थी, जिसकी ओर बेर्नादेत्त आकर्षित हुईं और यहीं से उनका आंतरिक परिवर्तन शुरू हुआ और उसके बाद धन्य कुँवारी मरियम एवं काथोलिक कलीसिया के प्रति

---

30 संस्मरण, 63

31 संस्मरण, 63

32 अंग्रेजी संस्मरण, 69

33 संविधान, नं. 43

34 संविधान, नं. 46

CamScanner

उनका सकारात्मक दृष्टिकोण शुरू हुआ।[35] धीरे–धीरे, उन्होंने अपना मन बदल लिया और काथोलिक कलीसिया को सच्चे धर्म के रूप में स्वीकार कर लिया। इसके बाद, काथोलिक कलीसिया में उनका बपतिस्मा हुआ और उनका नाम ख्रीस्त आनंदित रूथ से बदलकर मरिया बेर्नादेत्त हो गया। उनका पहला नाम धन्य कुँवारी मरियम के नाम से जुड़ा है और दूसरा नाम संत बेर्नादेत्त सुबीरू से जुड़ा है, जिन्हें लूर्द की माता मरियम ने बारंबार दर्शन दिया। चारों लड़कियों की धर्मसंघीय जीवन जीने की प्रबल इच्छा को देखकर आर्चबिशप पौल गोथल्स, ये.सं. ने लड़कियों के लिए सोदालिती अर्थात् निष्कलंक कुँवारी मरियम की संगत शुरू करने का फैसला किया।[36] उन्होंने कहा, ''अगर तुम चारो जन इस संगत में भर्त्ती होने के खूब योग्य होकर अति शुद्ध माँ निष्कलंक कुँवारी मरिया की सच्ची विश्वासी बेटियाँ बन जाओगी तब, और केवल तब पीछे से तुमलोगों के धार्मिक जीवन के विषय में देखूँगा।''[37] सोदालिस्त के रूप में वे धन्य कुँवारी मरियम के प्रति भक्ति में बढ़ती गईं एवं उनके गुणों को अपने व्यावहारिक जीवन में भी उन्होंने लागू किया।

मेरी बेर्नादेत्त माता मरियम के जीवन से प्रेरित थीं। जिस प्रकार धन्य कुँवारी मरियम ने ईश्वर के वचन को अपने हृदय में संजोये रखा, उसी प्रकार मेरी बेर्नादेत्त ने भी ईश–वचन पर मनन–चिंतन किया जिसने उनकी जीवन यात्रा में उनके मार्ग को रोशन किया। धन्य कुँवारी मरियम की तरह वे जरूरतमंद लोगों को अपनी निःस्वार्थ सेवा देने के लिए उत्साह से भरी थीं। वे दूसरों की जरूरतों के प्रति संवेदनशील थीं। वे एक विनम्र दासी के रूप में ईश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए सदा तैयार थीं। सभी बातों में येसु ख्रीस्त का अनुसरण करने के लिए माता मरियम ही उनकी आदर्श थीं।

डी.एस.ए. धर्मबहनें अपनी संरक्षिका संत अन्ना और रक्षक दूतों के प्रति भक्ति के अतिरिक्त येसु के पवित्र हृदय एवं धन्य कुँवारी मरियम के

---

35 संस्मरण, 21

36 संस्मरण, 40

37 संस्मरण, 41

CamScanner

प्रति भक्ति जैसी काथोलिक कलीसिया की प्राचीन भक्ति–पद्धति को बनाये रखती हैं।[38] प्रतिदिन वे शुद्धता के लिए माता मरियम के पास तीन ''प्रणाम मरियम'' की प्रार्थना कहती हैं। इसके अलावा, वे रोजरी माला के पाँच भेद व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से बोलती हैं।[39] इस प्रकार, वे धन्य कुँवारी मरियम के माध्यम से स्वयं को ख्रीस्त के साथ संयुक्त करती और संत अन्ना की एक आदर्श बेटी के रूप में उनके पदचिह्नों का अनुकरण करती हैं।

1.5 रखवाल दूत के प्रति विशेष भक्ति : लोरेटो कॉन्वेंट में रहने के दौरान, एक बार माता बेर्नादेत्त को एक गंभीर रूप से बीमार लड़की की देखभाल करने की बारी दी गई, जो उसी कमरे में स्वास्थ्य लाभ कर रही थी, जहाँ दो लाशें भी रखी हुई थीं। ऐसा हुआ कि लोरेटो मादर, जिन्हें रात में बेर्नादेत्त के साथ रहना था, अपने कमरे में गईं और वापस नहीं आ सकीं। दुर्भाग्य से, दो गीदढ़ वहाँ आए और बीमार कमरे में घुसने की कोशिश करने लगे। बेचारी बेर्नादेत्त ने उन्हें भगाने की पूरी कोशिश की, लेकिन यह महसूस करते हुए कि स्थिति को अकेले संभालना बहुत मुश्किल है, वे दरवाजे के बीच में एक मोमबत्ती रखकर छात्रावास से अपनी साथियों को बुलाने के लिए दौड़ीं। लेकिन वहाँ से जाने के पूर्व उन्होंने बीमार लड़की और लाशों को रखवाल दूतों को सौंपते हुए एक हृदयस्पर्शी प्रार्थना की, "आप लोग मुझे मदद दीजिए क्योंकि यह काम पूरा करने करने को मुझमें साहस नहीं है। देखिए, मैं आप लोगों की रक्षा में इन्हें सौंप देती हूँ; सो कृपा करके सब जोखिम और नुकसानी से बचा लीजिए।''[40] बड़ी आस्था के साथ की गई यह गहरी प्रार्थना रखवाल दूतों के प्रति उनकी बड़ी भक्ति को दर्शाती है। उनका दृढ़ विश्वास था कि ईश्वर दूतों के माध्यम से मनुष्यों की मदद करते हैं और विशेष रूप से रखवाल दूतों के माध्यम से उनकी रक्षा करते हैं।

---

38 संविधान, नं. 47

39 निर्देशिका, नं. 44 च

40 संस्मरण, 27

CamScanner

डी.एस.ए. धर्मबहनें सितंबर के महीने में गीत के साथ रखवाल दूतों की स्तुति विनती कर भक्ति को जारी रखती हैं। इसके अतिरिक्त, वे प्रतिदिन रात्री वंदना के बाद दूतों की नौ डिग्री के पास प्रार्थना करती हैं।[41]

1.6 आत्माओं के लिए उत्साह : माता बेर्नादेत्त के कुँवारी रहने के फैसले का उद्देश्य आत्माओं को स्वर्ग तक पहुँचने में मदद करने के लिए खुद को पूरी तरह से समर्पित करना था। उनमें आत्माओं को बचाने का बहुत उत्साह था। उन्होंने इसे लोरेटो मादरों के मिशन में पहचाना था जो आत्माओं को स्वर्ग तक पहुँचने में मदद करने के लिए दिन–रात बड़े प्रेम से मेहनत किया करती थीं।[42] लोयोला के संत इग्नासियुस की तरह, उनमें ईश्वर के राज्य के लिए आत्माओं को जीतने की प्रबल इच्छा थी; वे अपनी आत्मा और दूसरों की आत्मा को भी बचाना चाहती थीं। वृद्ध महिला सलोमी[43] को उत्तर देते हुए वे स्पष्ट रूप से कहती हैं, "माँ, मैं गहने पहनना पसन्द नहीं करती हूँ क्योंकि उससे मेरा दिल और आत्मा दुनियाँ की ओर झुककर अंत में बर्बाद हो जाएगा।"[44] इसका तात्पर्य यह है कि वे सांसारिक वस्तुओं को आत्माओं की मुक्ति में बाधक मानती थीं।

इसलिए, उन्होंने सोचा कि अपनी आत्मा की शुद्धता और अखंडता के लिए स्वयं को सोने के गहनों से दूर रखना ही बेहतर है। उन्होंने येसु के खातिर अपना जीवन खोना पसंद किया जिसने कहा, ''क्योंकि जो अपना जीवन सुरक्षित रखना चाहता है, वह उसे खो देगा और जो मेरे तथा सुसमाचार के कारण अपना जीवन खो देता है, वह उसे सुरक्षित रखेगा। मनुष्य को इससे क्या लाभ यदि वह सारा संसार

41 ''दूतों की नौ डिग्री'' की प्रार्थना डी.एस.ए. धर्मबहनों की आध्यात्मिक परंपराओं में से एक है। इस प्रार्थना के दौरान दूतों की प्रत्येक डिग्री के पास एक–एक करके एक बार 'हमारे पिता' और तीन बार 'प्रणाम मरियम' की प्रार्थना कही जाती है।

42 संस्मरण, 3

43 सलोमी एक बूढ़ी महिला थीं जिन्होंने बेर्नादेत्त को झाड़ी के पीछे छिपा हुआ पाया जो वहाँ रो रही थी क्योंकि वह उसके लिए तैयार किए गए सोने के गहनों को नहीं पहनना चाहती थी। इसके बाद उन्होंने बेर्नादेत्त के माता–पिता को उसके छिपकर रोने के बारे में बताया और उन्हें सुझाव दिया कि वे उस पर इस संबंध में दबाव न डालें।

44 संस्मरण, 10

CamScanner

तो प्राप्त कर ले, लेकिन अपना जीवन ही गँवा दे ?"[45] सचमुच, येसु ही स्वयं उनका सबसे अनमोल आभूषण था जिससे उन्होंने स्वयं को आध्यात्मिक रूप से सजाया था। ऐसे दिव्य आभूषणों की तुलना में स्वर्ण आभूषण तो कुछ भी नहीं थे।

लोरेटो मादरों के साथ कॉन्वेंट में छात्रा के रूप में रहने के दौरान, चार प्रथम माताओं को दया के कार्यों में भाग लेने के कई अवसर मिले। ऐसा ही एक अवसर वर्ष 1895 और 1896 में अकाल और हैजा महामारी के पीड़ितों की सेवा करना था, जैसा कि संस्थापिका ने वर्णन किया है:

> बेचारे चारों तरफ क्या शहर में, बस्ती, खेत, मैदान और रास्ता, सड़क की नालियों में इधर–उधर गिरे पड़े मर जाने लगे। उन्हीं दिनों में फादर लोग भी बहुत ही कम थे। तौभी जहाँ तक हो सका सब फादर लोग उन्हें आत्मा की और बदन की परबस्ती के निमित्त खूब दौड़–धूप किये हैं।... हम चार ही लड़कियाँ (मेरी तीन बहनें और मैं) अपने निज राजी और खुशी से उनके साथ रह गईं। प्यारी मादरों के साथ हमलोग रोज–रोज दवा, चावल, कपड़ा और चटाई कुलियों के द्वारा लेकर इधर–उधर, घर–घर, टोली–टोली बस्ती और गाँवों तरफ घूमा–फिरा करती थीं। तब जो जिनको दवा, चावल, दाल, कपड़ा चटाई का दरकार होगा सो देती थीं और दिलासा देकर उन्हें धर्म की मूल बातें समझाती दीं। और मरण –संकट में पड़े हुओं को तुरंत ही बपतिस्मा देती जाती थीं।[46]

उपर्युक्त घटना में उन्होंने हैजा पीड़ितों को न केवल लौकिक सामग्री दी, बल्कि उनकी आत्माओं को स्वर्ग तक पहुँचने में मदद करने के लिए आध्यात्मिक साधन भी दिए, विशेष रूप से उन्हें बपतिस्मा देकर। लोरेटो मादरों और चार लड़कियों ने आत्माओं की मदद करने के नेक काम में खुद को इस तरह शामिल कर लिया था कि उनके

---

45 मार. 8:35–36

46 संस्मरण, 42–43

CamScanner

पास प्रार्थना करने और भोजन करने के लिए भी समय नहीं था।[47] आत्माओं के प्रति जुनून ने उन्हें इस तरह व्यस्त कर दिया था कि येसु और उनके शिष्यों की तरह उन्हें खाने तक की फुर्सत नहीं थी।[48] ऐसी स्थिति में ईश्वर का वचन ही उनकी रोटी बन गया था, जिससे उन्हें अपने मिशन को आगे बढ़ाने के लिए बल मिला, जैसा कि स्वयं येसु ने कहा है, ''मनुष्य रोटी से ही नहीं जीता है। वह ईश्वर के मुख से निकलने वाले हर एक शब्द से जीता है।''[49] इसके अलावा, येसु स्वयं उनके लिए जीवन की रोटी बन गए थे जैसा कि उन्होंने कहा है, "जीवन की रोटी मैं हूँ। जो मेरे पास आता है, उसे कभी भूख नहीं लगेगी और जो मुझ पर विश्वास करता है, उसे कभी प्यास नहीं लगेगी।"[50] इसलिए, अपने गुरु येसु की तरह माता बेर्नादेत्त भी कह सकती थीं, ''जिसने मुझे भेजा है, उसकी इच्छा पर चलना और उसका कार्य पूरा करना, यही मेरा भोजन है।''[51]

1.7 दुनियावी चीजों के प्रति अनासक्ति : स्वर्ण आभूषण को इन्कार करने के अलावा, एक और उदाहरण संस्मरण में उद्धृत किया गया है। अविवाहित रहने के दृढ़ संकल्प को देखकर, जब बेर्नादेत्त के पिता ने लोरेटो मादरों के माध्यम से उनके कपड़ों की माँग की, तो उन्होंने सभी अच्छे कपड़ों को एक धन्यवाद पत्र के साथ सावधानी से मोड़कर बक्से में रख दिया। उन्होंने केवल फटे हुए कपड़ों को ही अपने पास रखा।[52] इग्नाशियन अनासक्ति के अनुसार, उन्होंने खुद को उन सभी चीजों से अलग कर लिया जो उन्हें ईश्वर से जुड़ने में बाधा डाल सकती थीं। वे येसु के निम्नलिखित शब्दों को अच्छी तरह समझ चुकी थीं, "कोई भी दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता। वह या तो एक से बैर और दूसरे से प्रेम करेगा, या एक का आदर और दूसरे को तिरस्कार करेगा। तुम ईश्वर और धन – दोनों की सेवा नहीं कर सकते।"[53]

---

47 संस्मरण, 43

48 मार. 6:31

49 मत्ती 4:4

50 यो. 6:35

51 यो. 4:34

52 संस्मरण, 39

53 मत्ती 6:24

CamScanner

उन्हें विश्वास था कि यदि वे सबसे पहले ईश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करेंगी, तो अन्य सभी चीजें उन्हें यों ही मिल जायेंगी।[54] इससे भी अधिक, उन्होंने स्वर्ग के राज्य को खेत में छिपे खजाने के सदृश पहचान लिया था और स्वर्गीय राज्य को पाने के लिए अन्य सभी खजानों को त्याग दिया था।[55] इसी तरह, जब उन्होंने ईश्वर और उसके राज्य को सबसे कीमती मोती के रूप में पा लिया तो उन्होंने अपना सब कुछ त्याग दिया।[56] असीसी के संत फ्रांसिस की तरह, उन्होंने अपने स्वर्गीय पिता पर पूरा भरोसा करते हुए फटे कपड़ों को छोड़कर अपने सभी कपड़े अपने सांसारिक पिता को सौंप दिए, जो अपने सभी बच्चों की देखभाल करते हैं और प्यार से उनकी सभी जरूरतों की पूर्ति करते हैं। बेशक, येसु के इन सांत्वना भरे शब्दों ने उन्हें आध्यात्मिक रूप से मजबूत किया, ''ऐसा कोई नहीं, जिसने मेरे और सुसमाचार के लिए घर, भाई–बहनों, माता–पिता, बाल–बच्चों अथवा खेतों को छोड़ दिया हो, और जो अब, इस लोक में, सौ गुना न पाये – घर, भाई–बहनें, माताएँ, बाल–बच्चे और खेत, और साथ–ही–साथ अत्याचार और परलोक में अनन्त जीवन।''[57]

1.8 सब कुछ में ईश्वर की खोज : माता बेर्नादेत्त का जीवन ईश्वरीय इच्छा की तलाश की एक आंतरिक यात्रा थी। कभी–कभी ईश्वर की इच्छा को ठीक–ठीक जानना आसान नहीं होता था फिर भी उन्होंने हर परिस्थिति में अपनी आध्यात्मिक खोज जारी रखी। और ईश्वर की इच्छा के प्रति आश्वस्त होने के बाद, वे नम्र हृदय से इसे स्वीकार करने के लिए तत्पर थीं। वे कष्ट सहने और चुनौतियों का साहसपूर्वक सामना करने के लिए भी तैयार थीं। उदाहरण के लिए, ईश्वर के खातिर कुँवारी रहने के फैसले के कारण उन्हें विभिन्न कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। एक ओर, उनके निज पिता पूरन प्रसाद ने उन्हें धमकी दी कि यदि वे अपने निर्णय पर डटी रहीं तो वे उसे मार डालेंगे, दूसरी ओर मिशनरी कार्य को सुविधाजनक बनाने के

54 मत्ती 6:33

55 मत्ती 13:44

56 मत्ती 13:45–46

57 मार. 10:29–30

CamScanner

लिए आर्चबिशप पौल गोथल्स, ये.सं. ने लोरेटो मादरों को उन सभी लड़कियों को स्कूल से निकाल देने का आदेश दिया जिन्होंने शादी करने से इनकार कर दिया। फिर भी, वे संत अन्ना की बेटी, धन्य कुँवारी मरियम की तरह ईश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए तैयार थीं, जिसने कहा, "देखिए, मैं प्रभु की दासी हूँ। आपका कथन मुझ पर पूरा हो जाये।"[58]

माता बेर्नादेत्त के संस्मरण में उनके द्वारा व्यक्त किए गए कई अंश हैं जो स्पष्ट रूप से दुःखद क्षणों में भी, सबसे ऊपर ईश्वर की इच्छा की तलाश करने की उनकी भावना को दर्शाते हैं। उदाहरण के लिए, लोरेटो स्कूल से उनके बर्खास्त किए जाने के संबंध में आर्चबिशप के आदेश को जानने के बाद, सभी लोरेटो माताओं को उन्हें विदा करने पर बेहद खेद हुआ। चारों लड़कियाँ भी बहुत दुःखी थीं, फिर भी उन्होंने इसे ईश्वर की इच्छा के रूप में स्वीकार किया जैसा कि माता बेर्नादेत्त लिखती हैं, ''परमेश्वर ही ने यह सब होने दिया है।''[59] जीवन की अप्रिय घटनाओं में भी ईश्वर का हाथ देखने की उनमें जबरदस्त क्षमता थी। दूसरा उदाहरण 1895 और 1896 में भयानक अकाल और हैजा की महामारी का है, जिसके कारण बहुत लोगों की मृत्यु और पीड़ाएँ हुईं। लेकिन ऐसी दयनीय स्थिति में भी वे यही कहती हैं कि सब कुछ ईश्वर ही के चलाने से ऐसा हुआ है।[60]

वर्ष 1896 में जब माता बेर्नादेत्त, माता सिसिलिया और माता बेरोनिका के साथ अपने परिवार के सदस्यों को अंतिम विदाई देने के लिए अपने पैतृक गाँव, सरगाँव गई थीं, वहाँ जुदाई का एक दर्द भरा क्षण था। वे बतलाती हैं कि उत्सव मनाने के बावजूद उनकी विदाई पर परिवार के सभी सदस्य और रिश्तेदार बहुत दुःखी थे। वे रोये, फिर भी ईश्वर की पवित्र इच्छा जानकर उन्होंने उन्हें विदा किया।[61] जब मादर मेरी तेरेसा, आई.बी.भी.एम का स्थानांतरण हो गया और वे राँची से कोलकाता के लिए प्रस्थान करने वाली थीं, तब फिर से

58 लूक. 1:38

59 संस्मरण, 7

60 संस्मरण, 42

61 संस्मरण, 45

CamScanner

डी.एस.ए. धर्मसंघ की चारों अग्रदूत माताएँ बहुत दुःखी हुईं क्योंकि वे एक स्नेही माँ की तरह थीं जिन्होंने बहुत प्यार से उनकी देखभाल की थी। लेकिन उन्होंने उनके स्थानांतरण को भी ईश्वर की इच्छा मानकर स्वीकार कर लिया।[62]

प्रथम मन्नत की रजत जयंती के संबंध में माता बेर्नादेत्त का कहना है कि इसे 8 अप्रैल 1926 को मनाने की योजना थी। सब कुछ अच्छी तरह से योजनाबद्ध था और इस अवसर के लिए तैयार था, लेकिन असीम ज्ञानी स्वर्गीय बाप की इच्छा ऐसी न थी।[63] दरअसल, फा. अल्फोंस स्कार्लाकिन, ये.सं., आध्यात्मिक गुरु की अचानक मृत्यु के कारण जयंती समारोह स्थगित कर दिया गया और बाद में इसे 27 मई 1926 को मनाया गया। इस कार्यक्रम में भी माता बेर्नादेत्त ईश्वर की इच्छा देखती हैं। इसी तरह, वे फा. फ्रेडरिक पील, ये.सं. के राँची से हजारीबाग स्थानांतरण में ईश्वर की इच्छा देखती हैं। वे लिखती हैं, ''28 दिसंबर 1933 को वे अपने प्रधानों, हाँ ईश्वर की ही पवित्र इच्छा से बदल जाकर वे हजारीबाग के सीतागढ़ा स्थित संत स्तानिस्लास कॉलेज में काम करने के लिए भेजे गये।''[64]

1.9 येसु के प्रेम से श्रेष्ठत्तर सेवा : डी.एस.ए. धर्मसंघ का कारिज्म है, ''येसु के प्रेम से श्रेष्ठतर सेवा''। यह स्वयं माता बेर्नादेत्त के कारिज्म से लिया गया है, जिन्हें येसु के प्रेम से ईश्वर के लोगों की सेवा करने के लिए पवित्र आत्मा की विशिष्ट कृपा (कारिज्म) प्राप्त हुई थी। शुरू से ही वे सेवा–भावना से भरी थीं। उनकी प्रथम प्रेरणा लोरेटो मादरों की तरह ईश्वर के लोगों की निःस्वार्थ सेवा करने की उनकी प्रबल इच्छा को दर्शाती है।[65]

जैसे लोयोला के संत इग्नासियुस ने ''ईश्वर की महत्तर महिमा'' के लिए सब कुछ किया, उसी तरह माता बेर्नादेत्त ने भी 'येसु के प्रेम से श्रेष्ठत्तर सेवा' के लिए स्वयं को प्रतिबद्ध किया। इसका तात्पर्य यह

62 संस्मरण, 53

63 संस्मरण, 66

64 संस्मरण, 69

65 संस्मरण, 3

CamScanner

है कि उन्होंने अपने सभी कार्यों में अधिकाधिक फल लाने के लिए उत्तम प्रयास किया। माता बेर्नादेत्त और उनकी साथियों ने अविवाहित रहकर बेहतर सेवा देने का निर्णय लिया ताकि वे पारिवारिक मामलों में शामिल होने के बजाय दूसरों की सेवा में अधिक समय लगा सकें। पुनः लोयोला के संत इग्नासियुस की तरह, 'मैजिस' (अधिक) की भावना के साथ, माता बेर्नादेत्त ने अपने जीवन और मिशन में अधिकतम पर लक्ष्य रखा। इससे भी अधिक, धन्य कुँवारी मरियम की तरह, जब भी अन्य विकल्प होते थे, माता बेर्नादेत्त हमेशा वही चुनती थीं जो बेहतर और अनुकूल हो। उदाहरण के लिए, लूथरन और कैथोलिक चर्च के बीच, उन्होंने दूसरा को सच्चे धर्म के रूप में चुना। सभी परिस्थितियों में लोगों के साथ सामंजस्य लाने के लिए उन्होंने यूरोपीय और स्वदेशी पोशाक के बीच दूसरी पोशाक को चुना। स्वर्गीय दूल्हे येसु और सांसारिक लूथरन दूल्हे के बीच, उन्होंने सब से ऊपर प्यार करने के लिए पहले को चुना। अपने पिता के क्रोध से बचने के बाद, उन्होंने ईश्वरीय और मानवीय शरण के बीच, पवित्र संस्कार के रूप में ईश्वरीय आश्रय को चुना।

येसु का अनुकरण करते हुए जिन्होंने कहा, ''मानव पुत्र अपनी सेवा कराने नहीं, बल्कि सेवा करने तथा बहुतों के उद्धार के लिये अपने प्राण देने आया है,''[66] माता बेर्नादेत्त ने भी अपना पूरा जीवन ईश्वर और मानवता की सेवा में समर्पित कर दिया। इसलिए, माता बेर्नादेत्त और उनकी सहेलियाँ लोरेटो मादरों की जीवन शैली और कार्यों को अधिक ध्यान से देखने लगीं। "वे इस इच्छा की पूर्त्ति के लिए दिन कहीं जो जैसा ही काम, बात आ निकले अर्थात् बच्चों को सिखलाना–पढ़ाना, दुःख–बिमारी में उनकी सेवा–टहल करने इत्यादि में मादरों को मदद देने के लिए लग जाती थीं।''[67]

माता बेर्नादेत्त की सेवा भावना का एक और प्रेरक उदाहरणस्वरूप वे तीन पत्र थे जिन्हें उन्होंने स्कूल से निकाले जाने के बाद अपने पिता पूरन प्रसाद को लिखे थे। उन्होंने उनसे इन शब्दों में अर्जी की,

---

66 मत्ती 20:28

67 संस्मरण, 3–4

CamScanner

"हे बाप, दया करके हमलागों के वास्ते फादरों से बात–विचार करके ठीक कीजिए, जिसमें हमलोग ईश्वर की सेवा के वास्ते सदा कुँवारी रह सकें। हमलोग निर्बुद्धि के कारण से सिस्टर हो नहीं सकती हैं तो मादरों की सेवा अवश्य कर सकेंगी।''[68] बाद में, सोदालिती में शामिल होने पर वे लोरेटो धर्मबहनों के साथ खुशी से रहने लगीं जिन्होंने उन्हें विभिन्न कार्य सौंपे, जैसा कि संस्मरण में उल्लेखित है:

> वे हमें नाना प्रकार के कामों में और अधिकता से लगाये। जैसे दिन–रात लड़कियों की देखभाल करना, गिरजा झाड़–पोंछ करना, सफाई करना, वेदी सिंगारना, पवित्र मिस्सा का कपड़ा तैयार करना। गिरजा कपड़ा धोकर इस्त्री करना, सिलाई करना, बीमारों और छोटे–छोटे नन्हें अनाथ बच्चों की सेवा–टहल करके रात–दिन जागरण करना, स्कूल में कुछ शिक्षा देना, धर्म की बातें लड़कियों और स्त्रियों को सिखलाना, उपदेश देना। गोदाम, बबर्चीखाना, बगान में साग–सब्जी, फल–फूलों को देखना और कभी–कभी बाजार इत्यादि का काम करना।[69]

माता बेर्नादेत्त ने ईश्वर और उनके लोगों की सेवा करने की अपनी प्रबल इच्छा अक्सर व्यक्त की है, लेकिन वे इसे और अधिक स्पष्ट रूप से तब बताती हैं जब वे श्री जोनस तिग्गा को समझाती हैं जिसने उनसे शादी करने का प्रस्ताव रखा था। वे उससे प्यार से कहती है: "प्यारे भाई जोनस, आपको मालूम होवे कि मैं येसु की सेवा में जाने चाहती हूँ। इसलिए, आप अपनी बात, काम और चाल से मेरे रास्ते पर कुछ भी कंकड़ी, ईंट, पत्थर के टूकड़े मत बिछाईएगा...यही तो हमारी अन्तिम बिदाती का प्रेमी नमस्कार है सो जानिएगा।"[70]

लोरेटो मादरों के साथ रहने के दौरान और विशेष रूप से 1895–1896 में हैजा और अकाल पीड़ितों की सेवा करने के दौरान बेर्नादेत्त और उनकी साथियों की समर्पित सेवा को देखने के बाद, मिशनरी

68 संस्मरण, 8

69 संस्मरण, 41

70 संस्मरण, 44

CS CamScanner

पुरोहितगण और लोरेटो धर्मबहनें स्वयं आर्चबिशप पौल गोथल्स, ये.सं. के पास गए। उन्होंने स्वयं गवाह के रूप में इन लड़कियों को बिना किसी देर के धार्मिक जीवन में शामिल करने का अनुरोध किया –

> पहले हमलोग कहते थे कि अविवाहित रहना देश का नियम विरूद्ध है...इन लड़कियों की कुँवारी रहने की तेज और दृढ़ इच्छाओं को मालूम करके, अब हमलोग खूब समझ गए हैं। इस वास्ते हो न हो, यह तो परमेश्वर ही का मनोरथ है। वह जरूर से यह चाहता है कि इस जंगली देश की लड़कियाँ भी, उसे विशेष रीति से प्रेम, सेवा और आत्मा बचाव के कामों में अपने को बिल्कुल दे डालें। सो, हे मान्यवर लाठ बिशप, आप ठीक से इसके बारे में सोच–विचार करके देख लीजिए कि क्या करना होगा।[71]

डी.एस.ए. धर्मबहनें जिम्मेदारी की भावना के साथ अपने विभिन्न प्रेरिताई कार्यों में बेहतरीन के लिए प्रयास करती हैं। समय की माँग के अनुसार वे आज के लोगों को श्रेष्ठत्तर सेवा प्रदान करने के लिए खुद को तैयार करती हैं। वे अपने मिशन में अधिक फलदायी परिणाम देने के लिए ईश्वर के अधिक कुशल साधन बनने का प्रयास करती हैं। वे हर कार्य सेवा भाव से करती हैं।

1.10 येसु के प्रेम से प्रज्वलित : यह डी.एस.ए. धर्मसंघ का आदर्श वाक्य है, जो पुनः माता बेर्नादेत्त के विशिष्ट गुण से लिया गया है। जैसे उन्होंने लोरेटो मादरों के दिलों में येसु के लिए प्रज्वलित आग को पहचाना था, वैसे ही वे भी येसु के प्रेम से प्रज्वलित थीं। वे उनके बारे में लिखती हैं कि आर्चबिशप की तेज इच्छा को जानकर, लोरेटो धर्मबहनें ईश्वर के प्रेम और उदारता से भरकर इस धर्म काम को करने में उद्यत हुई हैं।[72] वे लंबे थकाऊ रास्ते की चुनौतियों से निपटने के उनके अदम्य साहस का वर्णन करती हैं। लोरेटो माताओं को खतरनाक यात्रा करने के लिए भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा परन्तु येसु के प्रेम से परिपूर्ण होकर वे कुछ भी करने को तैयार

71 संस्मरण, 46

72 संस्मरण, 2

CamScanner

थीं। मूलभूत प्रेरणा में भी 'येसु के प्रेम से' वाक्यांश है जैसा कि यह वर्णित है :

> अगर ये मादर लोग येसु के प्रेम से अपने प्यारे बाप, माँ, भाई–बहन, मित्र और कुटुम्बों को, हाँ, अपने निज देश ही तक भी त्याग देकर हमारे इस दूर जंगली[73] देश में आकर हम अनजान, गरीब और नीच जातियों को इतना प्रेम–दुलार करके, हमारी आत्माओं को स्वर्ग में पहुँचाने के फिक्र से दिन–रात इतनी मेहनत किया करती हैं, तो क्या हमलोग भी इन्हों के नमूनों के अनुसार अपने देश और जातियों की भलाई के लिए नहीं करेंगी?[74]

इसके अलावा, माता बेर्नादेत्त ने मिशनरी येसुसंघियों में भी येसु के लिए उसी प्यार का एहसास किया था जैसा कि उन्होंने वर्णन किया है कि गर्मी की छुट्टियों के दौरान उनकी बहन सुशीला (सिसिलिया) के साथ ख्रीस्त आनंदित रूथ (बेर्नादेत्त) को अपने पिता के लिए भोजन देने आने के बारे में जानकर मिशनरी पुरोहितगण कितने खुश थे। 'येसु के प्रति उनके प्रेम' को स्वीकारते हुए वे लिखती हैं, ''इस खबर को पाकर, फादर लोग जो येसु के प्रेम से ज्वलित होकर आत्माओं को बटोरने में दिन–रात लिप्त हैं, अत्यंत प्रसन्न हुए।''[75] उनके संस्मरण में ''प्रेम'' शब्द कई बार आया है जो दर्शाता है कि माता बेर्नादेत्त स्वयं येसु के प्रेम से ओत–प्रोत थीं।

ईश सेवक फा. कोन्स्टंट लीवन्स, ये.सं., उन महान मिशनरियों में से एक थे जिनके अनुकरणीय जीवन ने माता बेर्नादेत्त के आध्यात्मिक जीवन को प्रभावित किया था। उनका आदर्श वाक्य था – ''आग जलती रहे''। निःस्संदेह, अपने आदर्श वाक्य के अनुसार वे भी येसु

73 'जंगली' (जंगल से भरा) शब्द हिंदी शब्द 'जंगल' का विशेषण है जिसका अर्थ है पहाड़। उन दिनों छोटानागपुर की भूमि घने जंगलों से भरी हुई थी जिसमें कई जंगली जानवर भी बहुतायत में पाए जाते थे और सड़कें तब विकसित नहीं हुई थीं जितनी आज विकसित हैं। यहाँ तक कि परिवहन के साधन भी उपलब्ध नहीं थे सिवाय 'पुसपुस' के, जो मजदूरों द्वारा खींची और धकेली जाने वाली एक प्रकार की गाड़ी थी।

74 संस्मरण, 3

75 संस्मरण, 18

CamScanner

के प्रेम से प्रज्वलित थे और उनके हृदय में खीस्त की आग थी। इसलिए, परोक्ष या प्रत्यक्ष रूप से, लोरेटो मादरों की तरह वे भी माता बेर्नादेत्त के प्रेरणा स्रोत बन गए थे जिनके पिता पूरन प्रसाद उनके अच्छे दोस्त थे। जो भी हो, सबसे बढ़कर, खीस्त स्वयं परम प्रकाश थे जिन्होंने उनके हृदय में प्रेम की आग जलाई थी। येसु के प्रेम से प्रज्वलित होकर, वे भी एक छोटी सी ज्योति बन गई थीं जो खीस्त के लिए जलने और उसकी रोशनी को चारों ओर फैलाने के लिए तैयार थीं जैसा कि उसने कहा है – "तुम संसार की ज्योति हो। पहाड़ पर बसा हुआ नगर छिप नहीं सकता। लोग दीपक जलाकर पैमाने के नीचे नहीं, बल्कि दीवट पर रखते हैं, जहाँ से वह घर के सब लोगों को प्रकाश देता है। उसी प्रकार तुम्हारी ज्योति मनुष्यों के सामने चमकती रहे, जिससे वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे स्वर्गीय पिता की महिमा करें।"[76]

1.11 कृतज्ञता का भाव : कृतज्ञता एक सरल और शुद्ध हृदय का मनोभाव है जो प्रेम और धन्यवाद से भरा होता है। माता बेर्नादेत्त का हृदय ईश्वर और सभी उपकारकों के प्रति कृतज्ञता से इतना भरा था कि उन्होंने उनकी छोटी–छोटी सहायता और परोपकार के लिए भी इसे शब्दों में गहराई से व्यक्त किया। सबसे बढ़कर, वे सर्वशक्तिमान ईश्वर की प्रचुर कृपाओं और भलाइयों के लिए उसकी आभारी थीं। अपने संस्मरण में वे कई बार "धन्यवाद" क्रिया का उपयोग करती हैं। उनकी कृतज्ञता के भाव को दो श्रेणियों में देखा जा सकता है :

ईश्वर के प्रति कृतज्ञता :

i) उस लड़के के पागल होने और मर जाने के बाद जिसके साथ उसके परिवार वाले बेरोनिका की शादी कराना चाहते थे, "हमलागों ने ईश्वर को खूब–खूब धन्यवाद दिया क्योंकि वह बहन बेरोनिका को ऐसी शोकमय दशा से मुक्त किया है।"[77]

---

76 मत्ती 5:14–16

77 संस्मरण, 23

CamScanner

ii) सुरक्षा के लिए भागने के बाद, ''लड़की भागती–भागती चली आई और चार बजे के पीछे कोनवेन्ट पहुँचकर गिर्जा में पवित्र संस्कार के सामने घुटनों के बल पर गिरकर आँसू बहाती हुई येसु को बहुत–बहुत धन्यवाद दी।''[78]

iii) सोदालिस्ट के रूप में शामिल होने के बाद, "अब तो जो थोड़ा दुःख–तकलीफें झेलनी पड़ी सो तो अन्त हुई हैं। ईश्वर को हम सब कोई विजय की कृपा के लिए अत्यंत हर्ष मनाके सारे दिल से धन्यवाद दी हैं।''[79]

iv) हैजा महामारी के बाद जब लोरेटो स्कूल फिर से खोला गया, "ईश्वर को बहुत–बहुत धन्यवाद होवे। अन्त में जब यह बीमारी बिल्कुल मिट गई, तो पीछे स्कूल फिर खुल गया।"[80]

v) पहले मन्नत के दिन, ''तो हमें जरूर से यह उचित है कि उसे यथाशक्ति अपने समस्त दिलोजान से प्यार, आदर और धन्यवाद देवें।''[81]

vi) डी.एस.ए. धर्मसंघ की रजत जयंती की तैयारी के बाद, ''तब जो दो जन जीवित हैं (सि. अन्ना सिसिलिया और मैं सि. अन्ना बेर्नादेत्त), हमलोग तीन रोज का आत्मिक साधन करके इस बड़े पर्व की याद में, अर्थात् इस दिन में असीम दयालु ईश्वर का बड़ा प्रेम, आशीष और कृपा उंडेला गया है, जिसका दिलोजान से धन्यवाद देने के लिए अपने को तैयार कीं।''[82]

vii) डी.एस.ए. धर्मसंघ के रजत जयंती समारोह के बाद, ''ऐसे तब छोटे–बड़े एक संग मिलकर असीम महान ईश्वर को, उसके बेबयान अद्‌भुद कृपाओं के लिए, यथाशक्ति प्रेम, आदर, प्रशंसा और धन्यवाद दिया गया है।''[83]

---

78 संस्मरण, 37

79 संस्मरण, 40

80 संस्मरण, 45

81 संस्मरण, 55

82 संस्मरण, 63

83 संस्मरण, 65

CS CamScanner

viii) फा. फ्रेडरिक पील, ये.सं. की नए गुरु और मार्गदर्शक के रूप में नियुक्ति के बाद, ''हमलोग उसके मिलने से बहुत खुश हुईं और ईश्वर को अत्यंत धन्यवाद दिया क्योंकि यही एक अति प्यारा पुराना पहचान वाला फादर था।''[84]

उपकारकों और अन्य लोगों के प्रति कृतज्ञता :

i) जब माता बेर्नादेत्त ने वृद्ध महिला सलोमी से अर्जी की, ''उनसे कह दीजिए कि मैं उन्हें सारे जी जान से सब कुछ के लिए खूब–खूब धन्यवाद देती हूँ और सदा देती रहूँगी। परन्तु मैं शादी करना और गहना इत्यादि सिंगार पहनना मंजूर नहीं करती हूँ।''[85]

ii) जब लूथेरन पादरी ने एक शिक्षिका को बेर्नादेत्त के पास वापस आने के निर्देश के साथ भेजा, "मैं एक बार काथोलिक धर्म जानना चाहती हूँ। अगर वह असल धर्म है तो मैं निश्चय उसे ग्रहण करूँगी और फिर न लौटूँगी। अगर नहीं है तो तुरन्त लौटूँगी। आपलागों की प्रेमी शिक्षा और मेहनतों के लिए मैं सारे दिल से धन्यवाद देती हूँ।''[86]

iii) मूसलाधार नदी को पार करने के बाद नाविक को धन्यवाद देते हुए कहा, ''इधर साहसी आदमी को खुशी से हमलोग खूब–खूब धन्यवाद देके विदा किया है।''[87]

iv) उपदेशक फादर से आशीर्वाद और पवित्र तस्वीरें प्राप्त करने के बाद, ''लड़कियाँ आँसू बहाती हुई फादर को उसके उत्तमोत्तम सलाह और तस्वीरों के लिए बहुत–बहुत धन्यवाद दे, घुटनों के बल गिरकर उससे आशीष ग्रहण की और पिता के साथ चल पड़ीं।''[88]

---

84 संस्मरण, 66

85 संस्मरण, 10

86 संस्मरण, 21

87 संस्मरण, 25

88 संस्मरण, 31

CamScanner

v) अपने माता–पिता को लिखे पत्र में, जिसे बेर्नादेत्त ने बॉक्स में अपने कपड़ों के साथ भेजा था, ''मान्यवर प्यारे माता–पिता, मैं आपलोगों के अपार प्रेम, मेहनत, दिक् तथा दुःखों के लिए सारे दिलोजान से बहुत–बहुत धन्यवाद देती हूँ।''[89]

vi) जीवन के संघर्षों पर जीत के बाद येसुसंघी पुरोहितों को धन्यवाद देते हुए, ''उन्हें यथाशक्ति दिलोजान से करोड़ों–करोड़ धन्यवाद देती हैं और प्रकट से स्वीकार करती हैं कि अगर इतने पवित्र मिस्सा, प्रार्थना और स्वदण्ड की सहायता हमें न मिली होती, तो निःसंदेह इस परीक्षा में हार जाती थीं।"[90]

vii) राँची से कोलकाता के लिए प्रस्थान करने से पहले मादर मेरी तेरेसा आई.बी.भी.एम. को धन्यवाद देते हुए कहा, ''हमलोग दिल टूटा हो बहुत रोती–विलापती हुई अपनी प्यारी मादर को यथाशक्ति अपनी कृतज्ञता प्रकट कीं। यह कहके कि प्यारी धर्म माँ, हमलोग आपके प्रेम तथा बेबयान उपकारों की याद, हमारे दिलों में छाप देकर, जीवन भर कभी न भूलेंगी।''[91]

viii) प्रथम मन्नत के दिन लोरेटो प्रोविंशियल मादर गोंजागा को धन्यवाद देते हुए, "हमलोगों के मन्नत करने के मनोहर खुश दिन के लिए, अति प्यारी प्रोविंशियल रेभ. एम.एम. गोंजागा ने आप फिर उपस्थित होकर हमारे सुख आनन्द को दुगुनी से चौगुनी बढ़ा दी है, सो उन्हें कोटि–कोटि धन्यवाद।"[92]

ix) लोरेटो धर्मबहनों के बारे में, ''इस वास्ते उनकी ओर हमारे दिलों में भी प्रेम तथा धन्यवाद की याद चिरकाल लों सदा बनी रहेगी।''[93]

x) उर्सुलाइन धर्मबहनों के संबंध में, "हम माननीय प्यारी मादरों की दया, प्रेम तथा सब भलाईयों के लिए दिलोजान से धन्यवाद देती हैं। धन्यवाद भी देती हैं कारण कि वे हमारे राँची–छोटानागपुर

89 संस्मरण, 39
90 संस्मरण, 40
91 संस्मरण, 53–54
92 संस्मरण, 55
93 संस्मरण, 57

CS CamScanner

वासियों के आत्मा बचाव के हेतु अपने अति प्यारे बाप, माँ, भाई—बहन, कुटुम्ब तथा मित्रगणों को, हाँ स्वदेश तक त्याग देकर इतने दूर मुल्क में आईं।"[94]

xi) डी.एस.ए. धर्मसंघ के रजत जयंती समारोह के बाद, "अब हम छोटी गरीब लाचार सिस्टरों की ओर से आप सब मान्यवर प्यारे पुरोहितगण, मान्यवर मादरगण तथा सब छोटे—बड़े प्यारे लोगों को यथासंभव दिलोजान से धन्यवाद देती हैं।"[95]

xii) प्रथम मन्नत की रजत जयंती के बाद, "इन सब प्रेमी उपकारों के लिए आप सब प्यारे फादरों, प्यारे सेमिनारियों तथा प्यारी मादरों को समस्त हृदय से धन्यवाद देती हैं।"[96]

1.12 मानव—केन्द्रित : मूलभूत प्रेरणा में ही, माता बेर्नादेत्त और उनकी तीन साथी बहनें विशेष रूप से अपने लोगों के प्रति और सामान्य रूप से संपूर्ण मानवता के प्रति अपनी शुभचिंता दर्शाती हैं। उनके अपने शब्दों में – "अगर ये मादर लोग येसु के प्रेम से अपने प्यारे बाप, माँ, भाई—बहन, मित्र और कुटुम्बों को, हाँ अपने निज देश ही तक भी त्याग देकर... तो क्या हमलोग भी इन्हों के सुन्दर नमूनों के अनुसार अपने देश और जातियों की भलाई के लिए नहीं करेंगी?"[97] ईश्वर के लोगों को निःस्वार्थ सेवा प्रदान करने की उनकी प्रबल इच्छा का तात्पर्य यह है कि वे ईश्वर के प्रतिरूप और समानता में बनाए गए हर इंसान में ईश्वर की उपस्थिति को अच्छी तरह से समझ गई थीं।[98] लोरेटो कॉन्वेंट में रहने के दौरान ही छोटी लड़कियों के मन में लोरेटो मादरों और मिशनरी फादरों के प्रति गहरा प्यार और सम्मान विकसित हो गया था। "वे उनकी ऐसी धार्मिक सुचाल इत्यादि ठीक मन—दिल देकर देखने लगीं तब वे भी मादरों को बहुत ही प्रेम और आदर करने लगीं।"[99] उनकी निःस्वार्थ सेवा का लाभार्थी मानव था जिसके लिए

94 संस्मरण, 59

95 संस्मरण, 65

96 संस्मरण, 68

97 संस्मरण, 3

98 उत्पत्ति 1:27

99 संस्मरण, 3

CS CamScanner

वे हर संभव प्रयास करने को तैयार थीं। "वे इस इच्छा की पूर्ति के लिए, दिन कहीं जो जैसा ही काम, बात आ निकले अर्थात् बच्चों को सिखलाना–पढ़ाना, दुःख–बीमारी में उनकी सेवा–टहल करने इत्यादि में मादरों को मदद देने के लिए लग जाती थीं।''[100]

माता बेर्नादेत्त न केवल लोरेटो मादरों और मिशनरी फादरों के प्रति बल्कि बीमार और कमजोर एवं छोटे लोगों के प्रति भी आदरभाव रखती थीं। दो लाशों के बीच पड़ी बीमार लड़की की देखभाल करना, मानव जीवन के प्रति उनके गहरे सम्मान और मूल्य को प्रदर्शित करता है। बेर्नादेत्त दुविधा में थीं लेकिन वे साहसपूर्वक उसकी और लाशों की रक्षा के लिए सभी संभव साधनों का उपयोग करती हैं। उन्होंने बहुत समझदारी से तर्क दिया, "अगर मैं भाग जाऊँ, तो इस जीवित लड़की को भारी नुकसान हो सकता और शायद मर भी जाएगी। फिर इन मुर्दे बदनों को गीदड़ अगर घसीटके निकाल लेवे और चीर–फाड़ कर देवे, तो कैसे शोकमय कारण और क्या ही नीच बुरी बात होगी।"[101]

माता बेर्नादेत्त और उनकी तीन साथियों की सेवा और सभी गतिविधियाँ लोकोन्मुख थीं। यह 1895 और 1896 में हुए हैजा और अकाल पीड़ितों के प्रति उनकी सेवा में स्पष्ट था। उनके लिए उनकी प्रेमपूर्ण देखभाल और चिंता पड़ोसियों के प्रति उनके सच्चे प्यार को दर्शाती है जैसा कि येसु मसीह ने सिखाया था। एक नवयुवक जोनस तिग्गा के संदर्भ में भी, जिसने माता बेर्नादेत्त से शादी करने की इच्छा व्यक्त की थी, वे उसकी भावनाओं के प्रति सम्मान और समझदारी दिखाती हैं। इसलिए, उन्होंने उसे गुस्से के साथ नहीं बल्कि उचित सम्मान और विवेक के साथ जवाब दिया।[102]

यूरोपीय शैली की पोशाक की अपेक्षा स्वदेशी पोशाक को चुनना इस तथ्य का एक अन्य उदाहरण है कि माता बेर्नादेत्त मानव–केंद्रित थीं। इस तरह के चुनाव का वास्तविक उद्देश्य था– किसी भी स्थिति में

100 संस्मरण, 3–4

101 संस्मरण, 27

102 संस्मरण, 44

CamScanner

अपने लोगों के बीच रहने में सक्षम होना, जैसा कि वे लिखती हैं – "हमलोग यूरोपियन पहिरावा तथा रहन–सहन इस कारण मंजूर नहीं करतीं क्योंकि हमारे देश की बहुत लाचारी हालत है। सो यदि हमें पीछे कुछ मुश्किलता आ पड़े, या कि इस देश में धर्म की सतावट आ जाए, जैसे दूसरे–दूसरे देशों में होता है, तो हमलोग दशा–दशा के अनुसार अपनी जाति भाई–कुटुम्बों के बीच रह सकेंगी।''[103]

1.13 परख–शक्ति : माता बेर्नादेत्त की आध्यात्मिकता की यह विशेषता इग्नाशियन आध्यात्मिकता में पाई जाने वाली आत्माओं की परख के समान है। लोरेटो मादरों और जेसुइट फादरों से धर्म–शिक्षा सीखना शुरू करने के तुरंत बाद ही उनके दिल की उपजाऊ मिट्टी में विवेक का बीज अंकुरित हो चुका था। ''होते–होते दो–तीन वर्ष के अन्दर ही में कोई चार लड़कियाँ अपने मन में यह विचार करने लगीं।''[104] परिणामस्वरूप, उन्होंने भी लोरेटो मादरों के उदाहरण के अनुसार येसु के खातिर हमेशा कुँवारी रहने का फैसला किया। इसके बाद, वे येसु के प्रेम और अपने धर्मसंघीय बुलाहट में और अधिक विकसित होती जाती हैं। अंततः, वे सदा के लिए ख्रीस्त की दुल्हन बन जाती हैं।

काथोलिक विश्वास को स्वीकार करने से पहले, माता बेर्नादेत्त सच्चे धर्म की परख की प्रक्रिया से गुजरी थीं। उन्होंने लूथरन धर्म और काथोलिक धर्म– दोनों की सच्चाई की खोज की। काथोलिक धर्म के बारे में आश्वस्त होने के बाद ही वे इसे स्वीकार करने के लिए सहमत हुई और अंततः बारह साल की उम्र में 31 जुलाई 1890 को उन्होंने काथोलिक बपतिस्मा ग्रहण किया। बाद में भी उन्हें परखने के कई अन्य अवसर मिले, जिसे उन्होंने हमेशा पवित्र आत्मा के प्रकाश में किया। उदाहरण के लिए, जब लोरेटो माताओं ने चार लड़कियों को फादरों द्वारा भेजे गए लड़कों के सामने यह जानने के लिए लाया कि क्या वे उनसे शादी करेंगी और उनके साथ खुश रहेंगी, तो माता बेर्नादेत्त ने लोरेटो सुपीरियर को विवेकपूर्वक उत्तर देते हुए कहा–

103 संस्मरण, 50

104 संस्मरण, 3

CamScanner

"मादर, आपको खूब मालूम है कि मैं विवाह करना ही नहीं चाहती हूँ और इसलिए मुझे ऐसे लड़कों के पास लाना ठीक नहीं बुझाता है। भला आप तो हमारे देश का दस्तूर नहीं जानती हैं, सच बात है। पर क्या ये लड़के भी नहीं जानते हैं? मैं स्कूल की लड़की तो हूँ सच बात, पर याद करना है कि मैं अनाथ नहीं हूँ। अगर अनाथ होती तो स्कूल में रहते ही मुझ पर आप लोगों का पूरा अधिकार होता था। फिर भी ये लड़के क्योंकर यहाँ आ सकते हैं लड़की चुन लेने के वास्ते? हम या कोई दूसरी लड़की उनका बाहरी रूप–रंग देखकर हाँ करेंगी?"[105]

माता बेर्नादेत्त की परख–शक्ति का एक और उदाहरण सोने के गहनों के संबंध में है जैसा कि उन्होंने वृध्द महिला सलोमी से कहा, "माँ, मैं गहने पहनना पसंद नहीं करती हूँ क्योंकि उससे मेरा दिल और आत्मा दुनिया की ओर झुक कर अंत में बर्बाद हो जाएगा।"[106] फिर अपने माता–पिता के मन की बात जानकर उन्होंने अंत में वृध्दा से कहा, ''मैं आप, अभी तुरन्त उनके पास जाना ठीक नहीं समझती हूँ, क्योंकि मैं उनसे अभी कुछ बोलूँ तो वे बहुत ही रूष्ट होंगे।''[107] रात में अकेली बीमार लड़की और दो लाशों का पहरा करने के दौरान उन्हें विवेकपूर्ण निर्णय का एक और मौका मिला। कोई अन्य विकल्प न मिलने पर, रखवाल दूतों से प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने मेज से बत्ती ली और उसे दरवाजे के ठीक बीच में रखकर, सि. मेरी आई.बी.भी.एम. को बुलाने के लिए कॉन्वेंट की ओर भागी। लेकिन अत्यधिक थकान के कारण उन्हें सोती हुई पाकर माता बेर्नादेत्त ने उन्हें नहीं जगाया, बल्कि तेजी से स्कूल की ओर चली गईं और अपनी सहेलियों से आकर उनकी मदद करने का अनुरोध किया।[108] इस घटना में भी उनकी सूझबूझ काबिले तारीफ है।

1.14 दृढ़ संकल्प (बेर्नादेत्तीय संकल्प) : येसु के खातिर हमेशा कुँवारी रहने के माता बेर्नादेत्त के क्राँतिकारी निर्णय के कारण बहुत सारी चुनौतियाँ और कठिनाइयाँ आईं लेकिन वे अपने संकल्प पर दृढ़

105 संस्मरण, 5–6
106 संस्मरण, 10
107 संस्मरण, 10–11
108 संस्मरण, 27–28

CamScanner

बनी रहीं। उन्होंने हर परिस्थिति में प्रभु पर भरोसा रखा। ईश्वर की सेवा हेतु अविवाहित रहने के अपने निर्णय के अतिरिक्त, वे अपने दृढ़ संकल्प के कई और उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। काथोलिक धर्म को सच्चे धर्म के रूप में पहचानने के बाद, उन्होंने दृढ़तापूर्वक कहा, ''हो न हो, यह धर्म सच्चा है, क्योंकि यहाँ मरिया का बहुत ही आदर–सत्कार दिखाई देता है ... अब जो हो सो हो, कुछ परवाह नहीं है, मैं अवश्य काथोलिक बनूँगी।''[109] बाद में लोरेटो मादरों, मिशनरी फादरों एवं अन्य लोगों को भी माता बेर्नादेत्त और उनकी तीन साथियों के दृढ़ संकल्प के बारे में पता चल गया। परिणामस्वरूप, उन्होंने स्वयं पहल करके आर्चबिशप पौल गोथल्स को चार लड़कियों के सकारात्मक प्रभाव के बारे में बताया और उनसे अनुरोध किया कि वे उन्हें धर्मसंघीय बुलाहट के मार्ग पर आगे बढ़ने की अनुमति दें।

माता बेर्नादेत्त द्वारा अभिव्यक्त दृढ़ संकल्प का एक सबसे अच्छा उदाहरण उस घटना में मिलता है जब वे और उनकी दो सहेलियाँ– सिसिलिया और मेरी, अनुमति प्राप्त करके, अपनी साथी बेरोनिका को लोरेटो स्कूल में वापस लाने के लिए सरगाँव गईं। उनके अपने शब्दों में, "अब हमलोग एक बड़े नाले के पास पहुँचीं जो पानी से उमड़ा हुआ निकट ही नदी में गिरता था। वह आदमी हमों की तेज इच्छा जान बड़ी–बड़ी कठिनाई सहकर हमें नाले को पार कर दिया।''[110] इसी घटना में नाला पार करने के बाद और एक तेज धारा वाली नदी थी जिसे पार करना बाकी था लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। अधिक उत्साह और आशा के साथ उन्होंने नाविक को जोर से बुलाया और वह भी उनके दृढ़ संकल्प को देखकर उन्हें नदी के पार ले जाने के लिए तैयार हो गया।

इसी प्रकार का दृढ़ संकल्प उनके जीवन में उनके धर्मसंघीय प्रशिक्षण के दौरान भी देखा जा सकता है। उनके दृढ़ संकल्प को जानने के बाद, आर्चबिशप पौल गोथल्स ने सि. मेरी तेरेसा आई.बी.भी.एम. के माध्यम से उनसे कहा कि यदि उनमें कॉन्वेंट जीवन जीने की उत्कट

109 संस्मरण, 21

110 संस्मरण, 25

CamScanner

इच्छा है, तो वे और आठ वर्षों तक इंतजार कर सकती हैं। प्रतीक्षा की लंबी अवधि के बावजूद, वे निराश नहीं हुईं, बल्कि आर्चबिशप के शब्द सुनकर, वे असीम खुशी से भर गईं और बड़े धैर्य के साथ अनुकूल दिन की प्रतीक्षा करने लगीं। माता बेर्नादेत्त लिखती हैं, "उसी दिन से हमलोग दिनों की, हफ्ते, महीने और बरस की गिनती करती जाती थीं, यह कह–कहकर कि आठ वर्षों में से इतने दिन कट गये हैं और हमारे दिल का साहस उठाती रहीं। हमलोग मादरों के साथ बड़ी खुशी से रहने लगीं।''[111]

यह जानने के बाद कि चारों लड़कियाँ ईश्वर और उनके लोगों की सेवा करने की अपनी पवित्र इच्छा में मजबूत थीं, आर्चबिशप पौल गोथल्स ने धर्मसंघीय परिधान के हिस्से के रूप में उनके बाल नहीं काटने और संत फ्रांसिस असीसी के तीसरे संघ के अनुसार जीवन जीने पर विचार करना शुरू कर दिया। लेकिन अपनी पोशाक के संबंध में, उन्होंने सुपीरियर मादर मेरी तेरेसा बोनर और प्रोविंशियल रेभ. एम. मेरी गोंजागा के माध्यम से आर्चबिशप से विनम्र अनुरोध किया कि उनके धर्मसंघ का परिधान और जीवन शैली यूरोपीय नहीं, बल्कि उनके देश के रीति–रिवाज के अनुसार होना चाहिए। इसलिए, दृढ़ निश्चय के साथ उन्होंने आर्चबिशप से कहा, ''हमलोगों को यह भी सुनने में आता है कि आपलोग हमारे सिर के बालों को न काटने का विचार कर रहे हैं। तो यह बात हमलोगों को नहीं पसंद आती है। हमारी यह तेज–तेज इच्छा है कि हमलोग समस्त दिलो–जान से ईश्वर की ही हो जाएँ। हाँ, सच बात है कि स्त्री जातियों के सिंगार तो विशेषकर सिर के बाल ही हैं सही, मगर उसे भी हमलोग खुशी से त्याग देने को तैयार हैं। यदि आपलोग तिस पर भी बालों को काटना मंजूर न करेंगे, तो जानिए कि हमलोग निज हाथों से अपने–आप काट लेंगी।''[112] माता बेर्नादेत्त के ऐसे असाधारण दृढ़ संकल्प को "बेर्नादेत्तीय संकल्प" कहा जा सकता है।

111 संस्मरण, 41

112 संस्मरण, 50

CamScanner

1.15 क्रूस के प्रति प्रेम : येसु के प्रेम से प्रज्वलित होने के कारण, माता बेर्नादेत्त का क्रूस के प्रति गहरा प्रेम था। जैसा कि येसु ने कहा है – ''जो मेरा अनुसरण करना चाहता है, वह आत्मत्याग करे और अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे हो ले।''[113] निस्संदेह, माता बेर्नादेत्त के जीवन में कई क्रूस आए और उन्होंने उन सब को ईश्वर के हाथ से आया समझकर बड़े प्रेम और कृतज्ञता के साथ स्वीकार किया। अपनी शैशवावस्था से ही, उन्होंने विभिन्न रूपों में उन क्रूसों का अनुभव किया जैसे– उनकी माँ पौलिना की मृत्यु जब बेर्नादेत्त केवल दो वर्ष की थीं, सच्चे धर्म की खोज में उनका संघर्ष, काथोलिक धर्म को स्वीकार करने के कारण लूथरन पादरी द्वारा उनके परिवार का कलीसिया से निष्कासन और समाज से बहिष्कार, शादी न करने का निश्चय करने वाली लड़कियों को स्कूल से निकाल देने का आर्चबिशप का आदेश, विवाह करने से इनकार करने पर उनके पिता द्वारा उसे तलवार से मार डालने की धमकी, येसु के खातिर अविवाहित रहने के उनके दृढ़ संकल्प के कारण उनके परिवार और रिश्तेदारों की डांट, घर में लगातार कठिन परीक्षाएँ, मिश्रित विवाह के लिए दबाव, प्रशिक्षण की लंबी अवधि की कठिनाइयाँ, डी.एस.ए. धर्मबहनों की अचानक मृत्यु, तपेदिक की उनकी दर्दनाक बीमारी और जीवन की अन्य कठिनाइयाँ एवं चुनौतियाँ।

एक छोटी बच्ची के रूप में, ख्रीस्त आनंदित रूथ (माता बेर्नादेत्त) को अपनी माँ की कमी का एहसास नहीं हुआ होगा क्योंकि उनकी सौतेली माँ मार्गरेट, पूरन प्रसाद की दूसरी पत्नी और उनकी बड़ी माँ अथात् प्रभु प्रसाद की पत्नी ने उनका बहुत प्यार से ख्याल रखा था। लेकिन जैसे–जैसे वे धीरे–धीरे बड़ी हुईं, ख्रीस्त आनंदित रूथ को अकेलापन महसूस हुआ, खासकर जब उनकी सौतेली माताएँ अपने निज बच्चों पर अधिक ध्यान देने लगीं। बाद में, आर्चबिशप पौल गोथल्स, ये.सं. के आदेश के अनुसार लोरेटो स्कूल से निकाल दिए जाने के बाद उन्होंने और उनकी तीन साथियों ने जीवन के क्रूस का अधिक ठोस रूप से अनुभव किया। वे अपने दर्द भरे अनुभव को निम्नलिखित शब्दों में वर्णित करती हैं, "प्यारी मादर लोग अपनी प्यारी लड़कियों

113 मत्ती 16:24

CamScanner

को पास बुलाकर प्यारे लाठ बिशप का हुक्म कह सुनाईं, समझाईं और प्रेम से आशीष देकर स्कूल से विदा कर दीं। अब बेचारी बेर्नादेत्त करे क्या? आह मारती, आँसू की धारा बहाती हुई सिसक–सिसक, रो–रो, कलप–कलप कर घर चली गई।''[114] वे जारी रखती हैं:

> घर में भी प्रतिदिन माता–पिता, भाई–बहन, कुटुम्ब और साथियों की ओर से हमेशा दिल की चूर्णता! सारी पृथ्वी जैसा हमारे लिए घोर अंधेरी रात बन गई थी। ऐसी निराश दशे में दिल बिल्कुल सूख जा, मुंह मलीन होकर सब काम और खान–पान की रूचि जाती रही। ऐसी दुर्दशा पर घर में रहते ही, तीन बार पिता को चिट्ठी के द्वारा अर्ज–विन्ती की।[115]

इसके बावजूद, माता बेर्नादेत्त हमेशा आशावादी बनी रहीं और कभी निराश नहीं हुईं। वे सभी परिस्थितियों में ईश्वर पर भरोसा रखती रहीं और सब कुछ को ईश्वर की इच्छा मानकर सकारात्मक दृष्टिकोण से स्वीकार करती रहीं। उन्होंने कहा, "दुनिया में कहाँ सुख और चैन पूरा हो सकता है, यहाँ पारादीस (*Paradise*) कैसे हो? जहाँ दुःख और लड़ाई, तहाँ तो चैन और जीत भी होती है। परमेश्वर ही ने यह सब होने दिया है।"[116] संत पौलुस के शब्द उन पर भी चरितार्थ होते हैं, "हम कष्ट, अभाव, संकट, कोड़ों की मार, कैद और उपद्रव में धीर बने हुए हैं और अथक परिश्रम, जागरण तथा उपवास करते हुए, हर परिस्थिति में, ईश्वर के योग्य सेवक की तरह आचरण करने का प्रयत्न करते हैं। हमारी सिफारिश है – निर्दोष जीवन, अन्तर्दृष्टि, सहनशीलता, मिलनसारी, पवित्र आत्मा के वरदान, निष्कपट प्रेम, सत्य का प्रचार, ईश्वर का सामर्थ्य।"[117]

क्रूस के प्रति माता बेर्नादेत्त का प्यार पुनः एक घटना में देखा जा सकता है जब कुछ मिशनरी पुरोहितगण उनके पिता पूरन प्रसाद से

---

114 संस्मरण, 7

115 संस्मरण, 8

116 संस्मरण, 7

117 2 कुरिन्थ 6:4–7

CamScanner

मिलने घर आए थे और उन्होंने कुछ धार्मिक वस्तुएँ छोड़ दी थीं। जब वे वहाँ से चले गए, तो माता बेर्नादेत्त, जो स्वयं को एक कोने में छिपाए हुए थीं, घर से बाहर आईं और अपने लिए क्रूस को चुन लिया, जैसा कि वे लिखती हैं, ''फादर लोग इस लडकी के वास्ते पिता के हाथ में छोटा क्रूस, रोजरी, स्कापुलर और तस्वीर दे दिए थे। लड़की पवित्र क्रूस के सिवाय और कुछ न ली।"[118] इस प्रकार, उन्होंने अन्य सभी खूबसूरत उपहारों की तुलना में क्रूस को प्राथमिकता दी। प्रतीकात्मक रूप से यह इंगित करता है कि उन्हें क्रूस के प्रति विशेष प्रेम था और स्पष्ट रूप से प्रभु येसु के प्रति जो सबके प्यार के खातिर क्रूस पर मर गए। इसलिए, वे संत पौलुस की तरह कह सकती थीं, ''मैं मसीह के साथ क्रूस पर मर गया हूँ।''[119]

एक और घटना जो माता बेर्नादेत्त के क्रूस के प्रति प्रेम को दर्शाती है, वह उस दिन की है जब वे अपनी छोटी बहन सुशीला (माता सिसिलिया) के साथ अपने पिता के लिए भोजन पहुँचाने गई थीं, जो फादरों के पास अदालती मामलों के विषय पर उनसे बात करने के लिए जाते थे। उन्होंने इसका उल्लेख इस प्रकार किया है –

> जब आये तब बहुत ही मृदु वाणी से बातचीत करने तथा क्रूस चिन्ह बनवाने लगे। सुशीला नामक लड़की तो अच्छी तरह से क्रूस का चिन्ह बनाई पर जेठी लड़की तो बनावे कैसी? शर्मिन्दा हो तौभी आज्ञा भंग के डर से एक उंगली उठाकर चुपचाप से हवा में क्रूस का चिन्ह बनाई। फादर और उपस्थित वाले सब हंस पड़े और कहने लगे कि धीरे–धीरे वह भी बहन के समान सीखेगी तब जानेगी।[120]

शादी के लिए तैयार न होने पर अपने पिता की उग्र प्रतिक्रिया से बचने के बाद, माता बेर्नादेत्त सुरक्षा के लिए पवित्र संस्कार की ओर भागीं। बाद में बाकी दोनों बहनें भी सही–सलामत लोरेटो कॉन्वेंट पहुँच गईं। इस प्रकार, एक–दूसरे को सुरक्षित देखकर वे बेहद खुश

---

118 संस्मरण, 17

119 गला. 2:19

120 संस्मरण, 18

CS CamScanner

हुईं और अपनी खुशियाँ साझा करते हुए बतलाने लगीं कि कैसे ईश्वर ने उन्हें ऐसी गंभीर स्थिति का सामना करने के लिए सबल बनाया। बंद कमरे में प्रार्थना करने के अपने तरीके के बारे में बताते हुए माता बेर्नादेत्त ने कहा, ''कमरे में पुआल रखा हुआ था। मैंने पुआल से क्रूस का रूप बनाया। मैंने येसु को याद किया जिसने हमारे लिए अपना क्रूस उठाया। मैंने प्रभु से प्रार्थना की कि वह मुझे अपना क्रूस ढोने में मेरी मदद करे।''[121] यह घटना भी क्रूस के प्रति उनके गहरे प्रेम की पुष्टि करती है।

माता बेर्नादेत्त और उनकी दो बहनों को शादी के लिए मजबूर करने के लिए उन्हें अलग करने की दर्दनाक घटना उन तीन युवकों– शद्रक, मेशक और अबेदनगो की घटना के समान थी, जिन्हें बेबीलोन के राजा नबूकदनेज़र द्वितीय ने राजा की छवि के सामने झुकने से इनकार करने पर आग की भट्ठी में फेंक दिया था।[122] उन तीन युवकों की तरह, तीन युवा लड़कियों– बेर्नादेत्त, सिसिलिया और बेरोनिका को भी ईश्वर ने आग में सोने की तरह परखा। बहरहाल, उन सबों ने आश्चर्यजनक साहस के साथ जीवन की सभी कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करके स्वयं को ईश्वर की सच्ची संतान साबित किया।

माता बेर्नादेत्त को जानने वाले गवाहों में से एक ने क्रूस के प्रति उनके प्रेम का वर्णन निम्नलिखित शब्दों में किया है –

> उनके जीवन के अंतिम दिनों में उनकी बीमारी से स्वास्थ्य लाभ के लिए उन्हें सोसो में रखा गया था। वे शारीरिक रूप से बहुत कमजोर हो गई थीं और गंभीर रूप से रोगग्रस्त हो गई थीं। अतः, उन्हें पुरुलिया रोड स्थित संत अन्ना मदर हाउस में लाया गया। उन्हें असहनीय दर्द था लेकिन उन्होंने कभी शिकायत का एक शब्द भी नहीं कहा। वे कभी भी ईश्वर की योजना के विरुद्ध नहीं गईं। उन्होंने अपना हर दर्द येसु को अर्पित किया। वे कहती थीं, ''येसु के दुःख की तुलना में, मेरा दुःख बहुत कम है।''[123]

---

121 अनुपा कुजूर एवं अ. भान एक्जेम, *सेवा की सौगात* (राँची,1997), 102

122 दानिएल 3:8–25

123 B. Kispotta, *The Memoirs of Sr. Anna Mary Bernadette DSA Founder of the...*

CamScanner

1.16 खीस्त के लिए प्रगाढ़ प्रेम : माता बेर्नादेत्त की आध्यात्मिकता की एक अनूठी विशेषता यह थी कि ख्रीस्त के लिए उनका प्रेम बहुत प्रगाढ़ था। अपने संस्मरण में, उन्होंने अक्सर 'पागल' शब्द के अलावा इसके पर्यायवाची शब्दों जैसे मूर्ख और उल्लू का भी उल्लेख किया है, जिनका प्रयोग अलग–अलग व्यक्ति उन्हें संबोधित करने के लिए करते हैं। लेकिन उन्होंने दूसरों द्वारा उनके लिए कहे गए ऐसे अपमानजनक शब्दों की कोई परवाह नहीं की क्योंकि वे ख्रीस्त के लिए सभी प्रकार के अपमान का सामना करने के लिए तैयार थीं, जो स्वयं हमारे लिए लोगों द्वारा अपमानित किया गया। वे आश्वस्त थीं कि "ज्ञानियों को लज्जित करने के लिए ईश्वर ने उन लोगों को चुना जो दुनिया की दृष्टि में मूर्ख हैं। शक्तिशालियों को लज्जित करने के लिये उसने उन लोगों को चुना जो दुनिया की दृष्टि में दुर्बल हैं। गण्य–मान्य लोगों का घमंड चूर करने के लिए उसने उन लोगों को चुना है जो दुनिया की दृष्टि में तुच्छ और नगण्य हैं।"[124] इससे भी अधिक, वे जानती थीं कि येसु को भी कुछ लोगों ने गलत समझा था, जिन्होंने उसके बारे में कहा था– ''उन्हें अपनी सुध–बुध नहीं रह गयी है।''[125]

माता बेर्नादेत्त को पागल या मूर्ख कहने वालों में से एक कोई और नहीं बल्कि उनके अपने पिता थे जो येसु के खातिर अविवाहित रहने के उनके दृढ़ संकल्प के कारण अप्रसन्न थे। उनका मन बदलने में असमर्थ होने के कारण वे उन पर चिल्लाये, ''बेटी,...तुम कहाँ तक मूर्ख उल्लु हो।''[126] माता बेर्नादेत्त के परिवार के अन्य सदस्य भी उनके लिए इसी प्रकार के शब्दों का प्रयोग करते थे। जब उन्होंने सोने के आभूषण पहनने से इंकार कर दिया तो उनके कुछ लोगों ने कहा, ''यह निपट पागल और मूर्ख नहीं है तो और क्या है?''[127] जब लोगों को लड़कियों के गुप्त विचारों के बारे में पता चला, तो वे टिप्पणी करने लगे– ''यह क्या पागल तमाशे की बात उठती है, यह तो हो ही

...*Congregation* (*Memoirs*), trans., Alex Ekka, Catholic Press Ranchi 2007, p. 69.

124 1 कुरिन्थ. 1:27–28

125 मार. 3:21

126 संस्मरण, 8

127 संस्मरण, 11

CamScanner

नहीं सकती है।''[128] पुनः माता बेर्नादेत्त और उनकी बहनों के विवाह न करने के दृढ़ संकल्प को देखकर लोगों ने उन्हें डाँटते हुए कहा– "तुम लोग ऐसी ढीठ मूर्ख हो।"[129]

यह जानते हुए कि बेर्नादेत्त अब लूथरन गिरजा जाना छोड़ चुकी है, प्रोतेस्तन्त पादरी ने उसे यह समझाने के लिए एक शिक्षिका को भेजा, "आप जाकर उसे अच्छी तरह से समझा दीजिए। वह क्यों ऐसी पागल होती है?"[130] फिर भी, धन्यताओं ने उन्हें येसु के प्रेम में स्थिर रहने के लिए अवश्य सुदृढ़ किया, ''धन्य हो तुम, जब लोग मेरे कारण तुम्हारा अपमान करते हैं, तुम पर अत्याचार करते और तरह–तरह के झूठे दोष लगाते हैं।''[131] इसलिए, उनके लिए जो भी शब्द इस्तेमाल किए गए, माता बेर्नादेत्त ने नकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं की, बल्कि येसु के प्यार के खातिर बड़ी सहनशीलता के साथ सब कुछ स्वीकार कर लिया और यह वही प्रेम था जिसने उनके गहरे आध्यात्मिक जीवन को सभी प्रकार के अपमान के बीच भी दृढ़ रहने में सक्षम बनाया। यह ठीक ही कहा गया है, ''प्रेम सब कुछ ढाँक देता है, सब कुछ पर विश्वास करता है, सब कुछ की आशा करता और सब कुछ सह लेता है।''[132]

1.17 ईश्वर पर पूर्ण निर्भरता : माता बेर्नादेत्त में बच्चों जैसी सरलता और स्वर्गीय पिता ईश्वर पर पूर्ण निर्भरता थी। ईश्वर में उनकी गहरी आस्था थी और उन्होंने ईश्वरीय इच्छा पूरी करने के लिए अपने सभी प्रियजनों को भी छोड़ दिया। उन्होंने प्रभु पर गहरा विश्वास रखते हुए सभी अच्छी चीजों का परित्याग कर दिया, जिसने कहा, ''चिंता मत करो, न अपने जीवन–निर्वाह की, कि हम क्या खायें और न अपने शरीर की, कि हम क्या पहनें।''[133] जीवन की सभी स्थितियों में उन्होंने प्रभु पर भरोसा रखा और दाखलता एवं उसकी डालियों की तरह सदा उसके प्रेम में दृढ़ बनी रहीं। लोरेटो स्कूल से निकाल दिए जाने के

128 संस्मरण, 4
129 संस्मरण, 33
130 संस्मरण, 21
131 मत्ती 5:11
132 1 कुरिन्थ. 13:7
133 मत्ती 6:25

CamScanner

बाद भी, उन्होंने तीन पत्र लिखकर अपने पिता से लोरेटो मादरों के साथ बात करने और मामले को सुलझाने का अनुरोध किया। हालाँकि उनके पिता ने किसी भी पत्र का उत्तर नहीं दिया, फिर भी वे अपनी आशा के कारण कभी निराश नहीं हुईं।

विभिन्न अवसरों और घटनाओं पर माता बेर्नादेत्त की ईश्वर पर पूर्ण निर्भरता उनके संस्मरण से प्राप्त की जा सकती है। मूसलाधार नदी को पार करते हुए, माता बेर्नादेत्त और उनकी दो सहेलियाँ ईश्वर पर पूर्ण विश्वास के साथ सरगाँव चल पड़ीं और अंततः वे सुरक्षित और सकुशल अपने गंतव्य तक पहुँच गईं। रात में लाशों और बीमार लड़की की रखवाली के दौरान भी उन्होंने ईश्वर और रखवाल दूत पर पूर्ण विश्वास और निर्भरता के साथ अपना चुनौतीपूर्ण कार्य किया। अपने पिता से बचकर भाग निकलने के बाद पवित्र संस्कार के सामने घुटने टेकना और प्रार्थना करना ईश्वर पर उनकी पूर्ण निर्भरता का सबसे अच्छा उदाहरण है। इसी भाँति, सभी प्रकार की घटनाओं में वे पूरी तरह से उस पर निर्भर होकर विजयी हुईं और संत पौलुस के समान वे दृढ़ विश्वास के साथ कह सकती थीं – " जो मुझे बल प्रदान करते हैं, मैं उनकी सहायता से सब कुछ कर सकता हूँ।"[134] माता बेर्नादेत्त भौतिक चीजों के लिए भी पूरी तरह से ईश्वर पर निर्भर थीं और उन्होंने लोरेटो एवं उर्सुलाइन मादरों, जेसुइट मिशनरियों और अन्य परोपकारियों के माध्यम से उनके प्यार और देखभाल का अनुभव किया। अतः, वे कृतज्ञ हृदय से गा सकती थीं– "प्रभु मेरा चरवाहा है, मुझे किसी बात की कमी नहीं।"[135]

1.18 आदिवासी संस्कृति से जुड़ाव : माता बेर्नादेत्त छोटानागपुर की आदिवासी बालाओं में से एक थीं। वे एक उराँव परिवार से थीं जो सुशिक्षित और सभ्य था। उनके परिवार के सदस्य आदिवासी समाज के जाने–माने और सम्मानित व्यक्ति थे। माता बेर्नादेत्त स्वयं आदिवासी संस्कृति तथा रीति–रिवाजों से परिचित थीं। जब लोरेटो मादरों ने माता बेर्नादेत्त और उनकी साथियों के सामने कुछ युवा

---

134 फिलि. 4:13

135 स्तोत्र 23:1

CS CamScanner

लड़कों को अपने भावी जीवन साथी के रूप में चयन के लिए प्रस्तुत किया, तो उन्होंने आत्मविश्वास से उन्हें उत्तर दिया, ''यह सब कुछ तो माता–पिता और भाई–कुटुम्बों से पहले देख–सुन कर विचार करना होता है। इसमें बन्दोबस्त ठीक–ठीक बने या बिगड़े, सो तो उनका काम है।''[136] इस प्रकार, वे चाहती थीं कि सब कुछ आदिवासी समाज के नियम–कानूनों के अनुसार की जाए। इसके अलावा, धर्मसंघीय परिधान के रूप में आदिवासी पोशाक का उनका बुद्धिमत्तापूर्ण चयन आदिवासी वेशभूषा में उनकी गहरी रुचि का एक ठोस प्रमाण है। इनके अतिरिक्त, बोर्डिंग स्कूल की अन्य लड़कियों के साथ माता बेर्नादेत्त एवं उनकी सहेलियाँ आदिवासी गायन और नृत्य का आनंद लिया करती थीं। ''गाना और नाचना भी कार्यक्रम में रखा जाता था। प्रायः शाम को लड़कियाँ नृत्य का आनंद लेती थीं।''[137]

संत अन्ना की पुत्रियों के रूप में धर्मबहन बनने के बाद भी, उन्होंने उर्सुलाइन मादरों की अनुमति से गायन और नृत्य की कुछ प्रथाओं को जारी रखा, जिनके अधीन वे काम करती थीं। उर्सुलाइन धर्मबहनों के इतिहास में छात्रावास की लड़कियों और संत अन्ना की पुत्रियों के पाठ्यक्रम का वर्णन किया गया है। स्कूल के पाठ्यक्रम में धर्म–शिक्षा, रसोई में काम करना, बगान में सब्जी उगाना, फूलवारी में फूलों की देखरेख, सिलाई और संगीत अर्थात् गायन और नृत्य शामिल थे।[138] इसके अलावा यह भी वर्णित है, "संत अन्ना की पुत्रियों ने ख्रीस्तमस समारोह को संगीत और नृत्य से आनन्दमय बना दिया। खुशी के माहौल में चार चाँद लगा दिया। कुछ उर्सुलाइन मादर भी इसमें साथ देने आईं। यह सन् 1903 की बात है। उस समय नृत्य भी पर्व का एक भाग होता था। रात को देर तक नाच चलता था। संत अन्ना की पुत्रियाँ और बच्चे–बच्चियाँ इसमें खूब आनन्द लेती थीं।''[139]

---

136 संस्मरण, 6

137 अनुपा कुजूर एवं अ. भान एक्जेम, *सेवा की सौगात* (राँची,1997), 64

138 अनुपा कुजूर एवं अ. भान एक्जेम, *सेवा की सौगात* (राँची,1997), 151–152

139 अनुपा कुजूर एवं अ. भान एक्जेम, *सेवा की सौगात* (राँची,1997), 153

CS CamScanner

1.19 ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण : माता बेर्नादेत्त का पूरा जीवन पूर्ण समर्पण का जीवन था। उन्होंने अपना सब कुछ ईश्वर और उसके लोगों की सेवा में समर्पित कर दिया। जिस दिन वे और उनकी तीन सहेलियाँ प्रार्थी (पोस्टूलंट) बनीं, उस दिन उनके द्वारा की गई प्रार्थना ईश्वर के प्रति उनके पूर्ण समर्पण का सबसे अच्छा उदाहरण है: ''हे येसु, मेरे छोटे चढ़ावे को मंजूर कर। तूने मुझे अपने को दे दिया है, मैं तुझे अपने को सौंप देने पाऊँ। मैं तुझे अपना बदन दे देती हूँ कि साफ, निर्मल रहे। मैं तुझे अपनी आत्मा दे देती हूँ कि पाप से अलग होवे। मैं तुझे अपना दिल दे देती हूँ कि तुझको नित प्यार करे। जितनी साँस मरने तक और मरते ही मुझे लेना है, सबको मैं तुझे दे देती हूँ। जीने में भी, मर जाने में भी मैं तुझे अपने को दे देती हूँ कि युग–युग मैं तेरी ही रहूँ।"[140] समर्पण की इस प्रार्थना में उनका शरीर, आत्मा, हृदय, श्वास, जीवन और मृत्यु शामिल हैं। न केवल शब्दों में बल्कि वास्तविक जीवन में भी उन्होंने खुशी–खुशी और आभारी दिल से अपना सब कुछ ईश्वर को न्यौछावर कर दिया।

माता बेर्नादेत्त की प्रार्थना लोयोला के संत इग्नासियुस की प्रार्थना के सदृश है, ''हे प्रभु, तुम मेरी सारी आजादी को ले लो। मेरी स्मरणशक्ति, मेरी बुद्धि एवं सारी इच्छा, तथा वह सब कुछ जिनसे मैं संपन्न हूँ और जो मेरे पास है। तूने मुझे सब कुछ दे दिया है। हे प्रभु, मैं इसे तुम्हें लौटाता हूँ। सब कुछ तुम्हारा है, इसे अपनी इच्छा के अनुसार पूरी तरह से प्रयोग कर। मुझे अपना प्रेम और अपनी कृपा दे दे, यह मेरे लिए पर्याप्त है।" माता बेर्नादेत्त की प्रार्थना इग्नाशियन आध्यात्मिकता की विशेषताओं को परिलक्षित करती है। इससे भी अधिक, स्वयं प्रभु येसु की युखरिस्तीय प्रार्थना खुद को पूरी तरह से ईश्वर को अर्पित करने की उनकी प्रेरणा–स्रोत है। अंतिम भोज में पवित्र युखरिस्त की स्थापना के दौरान, येसु रोटी और दाखरस के रूप में अपने शरीर और रक्त को अर्पित करते हैं। उसी तरह, माता बेर्नादेत्त ने भी अपना शरीर, आत्मा, दिल, मन और जो कुछ भी उनके पास था, उसे हमेशा के लिए ईश्वर और उसके लोगों की सेवा में अर्पित कर दिया। इस प्रकार, जीवन और मृत्यु में, वे सदा ईश्वर की ही बनी रहीं।

---

140 संस्मरण, 48–49

CamScanner

1.20 समूह–भावना : येसु पवित्र तृत्व का दूसरा जन है। उसने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर पिता के मिशन को पूरा किया। इस प्रकार, समूह भावना उनकी प्रेरिताई का एक अभिन्न अंग थी। इसलिए, उन्होंने बारह प्रेरितों का एक विशेष समूह बनाया। इसी तरह, शुरुआत से ही, माता बेर्नादेत्त ने एक टीम भावना विकसित की। सिमोन पेत्रुस और उसका भाई अन्द्रेयस, याकूब और उसका भाई योहन येसु के प्रथम शिष्य थे।[141] इसी प्रकार, ईश्वर और उसके लोगों की सेवा करने के लिए अविवाहित रहने की मूलभूत प्रेरणा माता बेर्नादेत्त और उनकी तीन सहेलियों को प्राप्त हुई थी। "होते–होते दो–तीन वर्ष के अन्दर ही में कोई चार लड़कियाँ अपने मन में यह विचार करने लगीं।"[142] बाद में, ये चार अग्रणी माताएँ संत अन्ना की पुत्रियों के धर्मसंघ राँची की चार स्तंभ बन गईं। जीवन की सभी परिस्थितियों में वे सदैव एक–दूसरे के साथ जुड़ी रहीं। खुशी एवं गम में, सफलताओं और असफलताओं में, उदासी और आनन्द में वे विश्वासियों के प्रथम समुदाय की तरह एक हृदय और एक प्राण की थीं।[143] मिशनरी कार्य में बाधा को रोकने के लिए माता बेर्नादेत्त सहित तीनों लड़कियों को लोरेटो स्कूल से निकाल दिया गया। हालाँकि, उनकी सच्ची बुलाहट का एहसास होने पर, बाद में उन्हें स्कूल में पुनः वापस बुलाया गया। जैसे ही उन्हें यह खुशखबरी पता चली तो उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा और वे बेरोनिका को बुला लाने के लिए सरगाँव चल पड़ीं। घर की राह पर आने वाली सभी चुनौतियों का उन्होंने बहादुरी से सामना किया।

विवाह से इनकार करने के बावजूद, उनके माता–पिता ने तीनों बहनों अर्थात् बेर्नादेत्त, सिसिलिया और बेरोनिका की शादी की व्यवस्था कर दी थी। लेकिन फिर से उन्होंने साहसपूर्वक उस बड़ी परीक्षा पर विजय प्राप्त की। हैजा और अकाल की महामारी के दौरान, दुःखित पीड़ितों की सेवा में लोरेटो मादरों और मिशनरी फादरों की सहायता करने के लिए ये चार लड़कियाँ अपने स्वतंत्र निर्णय से लोरेटो कॉन्वेंट

---

141 मार. 1:16–20

142 संस्मरण, 3

143 प्रे.च. 4:32–37

CamScanner

में रह जाती हैं। लोरेटो मादरों की अनुमति से उनमें से तीन जोनस और लुईसा के विवाह समारोह में शामिल होने के लिए ब्राम्बे गई थीं। कॉन्वेंट स्कूल की लड़कियाँ मिलकर रात में गीदड़ों को भगाने में बेर्नादेत्त की मदद करती हैं। लोरेटो मादरों के साथ रहते हुए, उन्होंने एक साथ अध्ययन किया और सीखा, उन्होंने एक साथ गाया और नृत्य किया तथा उन्होंने साथ मिलकर प्रार्थना की और काम किया। जब बेर्नादेत्त ने सभी अच्छे कपड़ों को अपने माता–पिता को वापस भेज दिया, तो उनकी मदद करने के लिए कॉन्वेंट की लड़कियों ने उन्हें उदारतापूर्वक सभी आवश्यक चीजें दीं। इस प्रकार, जीवन के हर कदम पर चारों अग्रणी माताएँ एक साथ चलीं और प्रभु के साथ चलते हुए अपनी समूह भावना को बनाए रखीं।

CamScanner

अध्याय 2

सुसमाचारी परामर्श और माता मेरी बेर्नादेत्त

2.1 शुद्धता : सुसमाचारी परामर्श–शुद्धता ईश्वर का एक विशिष्ट उपहार है जिसे ''स्वर्ग राज्य के निमित्त'' अपनाया जाता है।[1] माता मेरी बेर्नादेत्त को ईश्वर से यह उपहार मिला था, इसलिए उन्होंने हमेशा कुँवारी रहने का फैसला किया। "जो कुँवारी है, वह प्रभु की बातों की चिंता करती है। जो विवाहित है, वह दुनिया की बातों की चिंता करती है, और अपने पति को प्रसन्न करना चाहती है।"[2] माता मेरी बेर्नादेत्त भी अपना संपूर्ण जीवन पूरी तरह से प्रभु को समर्पित करने के लिए सांसारिक मामलों से मुक्त रहना चाहती थीं। उन्होंने सुसमाचारी शुद्धता को ''सबसे उपयुक्त साधन के रूप में अपनाया जिसके द्वारा धर्मसंघी स्वयं को ईश्वर की सेवा और प्रेरितिक कार्यों के लिए अविभाजित हृदय से समर्पित करते हैं।''[3]

माता बेर्नादेत्त का स्वर्ण आभूषण पहनने से इनकार करना सांसारिक आकर्षणों से दूर रहने की उनकी पवित्र इच्छा को दर्शाता है क्योंकि वे सरलता से कहती हैं, "मैं गहने पहनना पसन्द नहीं करती हूँ क्योंकि मेरा दिल और आत्मा दुनिया की ओर झुक कर अंत में बर्बाद हो जाएगा।"[4] जिस लड़के से उनके माता–पिता ने उनकी शादी तय की थी, माता बेर्नादेत्त ने साहसपूर्वक उत्तर दिया, "आप लोग यह मत सोच कीजिए कि मेरा दिल किसी दूसरे लड़के पर लगा हो। अगर आप लोग ऐसे सोचते होंगे तो यह बड़ी भूल है सो जानिए। मैं स्पष्टता से स्वीकार करती हूँ कि शादी करना मुझे नामंजूर है।"[5] इस प्रकार वे

1 मत्ती 19:12

2 1 कुरिन्थ. 7:34

3 पी.सी.12

4 संस्मरण, 10

5 संस्मरण, 36

CamScanner

अपने अविभाजित हृदय से येसु को प्रेम करना चाहती थीं। इसी तरह, माता बेर्नादेत्त जोनस से, जो उनसे शादी करना चाहता था, कहती हैं कि वे प्रभु येसु को प्यार करना और उसकी सेवा करना चाहती हैं, इसलिए उसे उनके लिए बाधा नहीं बनना चाहिए।[6]

माता बेर्नादेत्त और उनकी सहेलियों के कुँवारी रहने के दृढ़ निर्णय को प्रारंभ में दूसरों के लिए समझना और स्वीकार करना मुश्किल था, लेकिन बाद में कई येसुसंघी पुरोहितगण, लोरेटो धर्मबहनें एवं अन्य लोग उनकी वास्तविक बुलाहट को समझने लगे। अतः उन्होंने आर्चबिशप से अर्जी करते हुए कहा, ''पहले हमलोग कहते थे कि अविवाहित रहना इस देश का नियम विरूद्ध है... परन्तु हमलोग इन लड़कियों की चाल, बात और विशेष कर इनके कामों को देख कर पूरे तौर से मालूम करते हैं कि इन्हों का इरादा जो है सो खूब ठीक तथा पक्का है।"[7] माता बेर्नादेत्त की समर्पण प्रार्थना स्पष्ट रूप से पवित्र होने की उनकी प्रबल इच्छा को दर्शाती है। वे कहती हैं, "हे येसु,...मैं तुझे अपना बदन दे देती हूँ कि साफ, निर्मल रहे। मैं तुझे अपनी आत्मा दे देती हूँ कि पाप से अलग होवे।"[8] वे आर्चबिशप से यह भी कहती हैं, ''हमारी यह तेज–तेज इच्छा है कि हम लोग समस्त दिलो–जान से ईश्वर ही की हो जायें।''[9]

2.2 निर्धनता : माता बेर्नादेत्त एक अमीर परिवार से थीं, फिर भी उन्होंने येसु के खातिर निर्धनता को प्यार किया। स्वर्ण आभूषण न पहनने की उनकी सच्ची इच्छा उन उदाहरणों में से एक है जो उनकी सादगी और सुसमाचारी निर्धनता को प्रदर्शित करती है।[10] उन्होंने ख्रीस्त का अनुसरण करते हुए स्वैच्छिक निर्धनता का अभ्यास किया जो धनी होते हुए भी निर्धन बन गए ताकि उनकी निर्धनता से

6 संस्मरण, 44

7 संस्मरण, 46

8 संस्मरण, 49

9 संस्मरण, 50

10 संस्मरण, 10

CamScanner

वे धनी बन सकें।[11] अपने माता–पिता की माँग पर, माता बेर्नादेत्त ने फटे कपड़ों को छोड़कर, अपने सभी अच्छे कपड़े एक हृदय–स्पर्शी धन्यवाद पत्र के साथ उन्हें वापस भेज दिए। उन्हें स्वर्गीय पिता की कृपा पर पूरा भरोसा था जो अपने प्यारे बच्चों की सभी जरूरतों को पूरा करता है।[12] उनके धर्मसंघीय परिधान में भी सुसमाचारी निर्धनता को देखी जा सकती थी जो यूरोपीय नहीं बल्कि भारतीय रीति–रिवाज और संस्कृति के अनुरूप थी।[13] माता बेर्नादेत्त विनम्रतापूर्वक स्वीकार करती हैं कि संत अन्ना की पुत्रियाँ बहुत गरीब और असहाय थीं, जो किसी से छिपा नहीं था।[14] इतना ही नहीं, अपने संस्मरण के अंत में, माता बेर्नादेत्त ने फा. पील, ये.सं. द्वारा संत अन्ना की गरीब बेटियों के लिए छोड़े गए मिस्सा कपड़ों, पवित्र सामग्रियों और कई अन्य जरूरत की चीजों का उल्लेख किया है।[15] अपने दैनिक जीवन में भी उन्होंने सुसमाचारी निर्धनता एवं धन्यता के जीवन की साक्षी दी। ‘‘धन्य हैं वे जो अपने को दीन–हीन समझते हैं, स्वर्गराज्य उन्हीं का है।’’[16]

2.3 आज्ञापालन : मेरी बेर्नादेत्त एक आज्ञाकारी और अनुशासित लड़की थीं। वे हमेशा अपने माता–पिता का सम्मान करती थीं और प्यार से उनकी आज्ञा मानती थीं। यहाँ तक कि जब उनके पिता पूरन प्रसाद बेर्नादेत्त, सिसिलिया और बेरोनिका को उनके विवाह समारोह के लिए बुलाने के लिए लोरेटो स्कूल गए, तो उन्होंने उनकी बात मानी और उनके साथ घर चली गईं।[17] उनकी तत्पर आज्ञाकारिता का एक और उदाहरण अपने माता–पिता को उनकी माँग पर एक प्यार भरे पत्र के साथ अपने कपड़े भेजना है जिसमें उन्होंने लिखा था, ‘‘आपलोगों की आज्ञाधीन बेटी, ख्रीस्त आनंदित रूत मेरी बेर्नादेत्त।’’[18]

11 2 कुरिन्थ. 8:9; मत्ती 8:20
12 मत्ती 6:25; पी.सी. 13
13 संस्मरण, 50
14 संस्मरण, 62
15 संस्मरण, 70
16 मत्ती 5:3
17 संस्मरण, 31
18 संस्मरण, 39

CamScanner

बाद में, माता बेर्नादेत्त और उनकी सहेलियों ने कॉन्वेंट में रहते हुए लोरेटो मादरों का भी आज्ञापालन करना सीख लिया। वे लिखती हैं, ''हम लोग तब अक्टूबर 1896 ईस्वी में अपने माता–पिता से विदा होकर कॉन्वेंट में रह गईं और सब बात कामों में जो जैसे काम बात होवे रात–दिन उनके अधीन रहने को ठान लीं।''[19]

विवाह के बारे में माता बेर्नादेत्त का प्रत्युत्तर सुनकर जब जोनस तिग्गा ने उनसे अपने जीवन साथी के रूप में किसी लड़की का नाम सुझाव करने को कहा तो उन्होंने कहा कि वे अपने माता–पिता की अनुमति के बिना कहीं नहीं गईं। केवल एक बार वे मादरों की अनुमति से ब्राम्बे में एक विवाह समारोह के लिए गई थीं।[20] उनका प्रत्युत्तर अपने माता–पिता एवं लोरेटो मादरों के प्रति उनकी आज्ञाकारिता को दर्शाता है, जिनके कॉन्वेंट में वे और उनकी साथियाँ अपने माता–पिता को अलविदा कहने के बाद रहती थीं। धर्मबहन बनने के बाद भी, वे चर्च के अधिकारियों, लोरेटो मादरों तथा उर्सुलाइन सिस्टरों के प्रति हमेशा आज्ञाकारी बनी रहीं। ''सो वे आज्ञा पाकर रात–दिन उनकी सेवा करने लगीं।''[21] सबसे बढ़कर, वे ईश्वर के प्रति आज्ञाकारी थीं और ख्रीस्त का अनुसरण करते हुए हर चीज में उसकी इच्छा पूरी करती थीं जिन्होंने दुःख की पाठशाला में आज्ञापालन सीखा था।[22]

19 संस्मरण, 44

20 संस्मरण, 44

21 संस्मरण, 61

22 इब्रा. 5:8

CamScanner

अध्याय 3

ईश्वरीय सद्गुण और माता मेरी बेर्नादेत्त

3.1 विश्वास : ''विश्वास उन बातों की स्थिर प्रतीक्षा है, जिसकी हम आशा करते हैं और उन वस्तुओं के अस्तित्व के विषय में दृढ़ धारणा है, जिन्हें हम नहीं देखते।''[1] प्रारंभ में माता बेर्नादेत्त काथोलिक धर्म में धीरे–धीरे लेकिन लगातार बढ़ती गईं क्योंकि छोटानागपुर के इस भाग में काथोलिक धर्म के आगमन से पहले ही उनका बपतिस्मा लूथरन चर्च में हो चुका था। जो भी हो, बाद में जब उन्होंने काथोलिक धर्म को स्वीकार किया और इस कलीसिया में उनका नामकरण किया गया, उनका विश्वास चट्टान पर बने मकान की तरह बहुत मजबूत हो गया (मत्ती 7:24–27)। कठिनाइयों और इम्तिहानों के बीच भी, वे ईश्वर में अपने विश्वास पर दृढ़ रहीं, जैसा कि वे पुष्टि करती हैं, ''तीनों अपने में दृढ़ मनसूबा बाँधीं कि ईश्वर की दया से इस परीक्षा में विजय प्राप्त करने की शक्ति भर कोशिश किया करेंगी।''[2]

लोरेटो मादरों के गिरजाघर में शरण लेना और पवित्र संस्कार के सामने घुटने टेकना ईश्वर में उनके गहरे विश्वास को व्यक्त करता है।[3] वे पूरी तरह आश्वस्त थीं कि सब कुछ ईश्वर की इच्छा और योजना के अनुसार होता है। ''निःसंदेह यह असीम दयालु परमेश्वर ही के करतूत से ऐसा हुआ है।''[4] वे आनन्द और दुःख दोनों ही घटनाओं को ईश्वर की इच्छा के रूप में स्वीकार करती हैं। वे जीवन की हर सफलता और जीत के लिए ईश्वर की आभारी रहती हैं जैसा कि वे लिखती हैं, ''ईश्वर असीम मेहरबान और दानदाता की विशेष कृपा से अकेला; हमलोग इस ऊँचे और पवित्र हाल तक उठाई गई

1 इब्रा. 11:1

2 संस्मरण, 32

3 संस्मरण, 37

4 संस्मरण, 45

CamScanner

हैं।''[5] उनके विश्वास को मजबूत करने में आध्यात्मिक गुरुओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण थी। अतः फा. पील, ये.सं. के त्यागपूर्ण कार्यों की सराहना करते हुए माता बेर्नादेत्त कहती हैं, ''वह हमों को इतने उत्साहित से प्यारे येसु, निष्कलंक माँ मरिया तथा संतों के जीवन चरित्र सुना–सुनाकर हमारे दिलों में विश्वास, भरोसा और प्रेम बढ़ाने की अथक चेष्टा किया करता था।''[6] इस प्रकार, माता बेर्नादेत्त का विश्वास सुदृढ़ हो गया। परिणामस्वरूप, वे अन्य भाई–बहनों का विश्वास भी मजबूत कर सकीं।

3.2 आशा : आशा उन ईश्वरीय गुणों (Theological Virtues) में से एक है जो ईश्वर से आती है। यह व्यक्ति को जीवन की कठिनाइयों और चुनौतियों के बावजूद आशावादी बने रहने में मदद करती है। यह आशा ही थी जिसने माता मेरी बेर्नादेत्त और उनकी सहेलियों को अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ने की शक्ति दी। परिणामस्वरूप, विभिन्न कठिनाइयों और प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद वे अपने निर्णय पर दृढ़ रहीं। संत पौलुस की तरह, माता बेर्नादेत्त कह सकती थीं, ''मेरी हार्दिक अभिलाषा और आशा यह है कि चाहे मैं जीवित रहूँ या मरूँ, मुझे किसी बात पर लज्जित नहीं होना पड़ेगा और मसीह मुझमें महिमान्वित होंगे।"[7] कुँवारी रहने के दृढ़ संकल्प के कारण स्कूल से निकाल दिए जाने के बाद भी, उन्होंने प्रभु में अपनी आशा कभी नहीं खोई, जैसा कि माता बेर्नादेत्त लिखती हैं, ''जहाँ दुःख और लड़ाई, वहाँ तो चैन और जीत भी होती है।''[8] इस हृदय विदारक घटना में भी उन्होंने बड़ी आशा से अपने पिता पूरन प्रसाद को तीन पत्र लिखे ताकि वे उनके लिए बात कर सकें और उन्हें लोरेटो स्कूल में पढ़ाई जारी रखने की अनुमति देकर मामला सुलझा सकें।[9] अंततः, उनकी आशा फलदायी साबित हुई क्योंकि उन्हें आर्चबिशप पौल गोथल्स, ये. सं. के आदेश पर स्कूल में वापस बुलाया गया।

---

5 संस्मरण, 55

6 संस्मरण, 69

7 फिलि. 1:20

8 संस्मरण, 7

9 संस्मरण, 8

CS CamScanner

अपने अच्छे कपड़े अपने माता–पिता को वापस भेजने के बाद, माता बेर्नादेत्त चिंता से मुक्त रहीं, क्योंकि उन्हें प्रभु पर आशा थी जो एक अच्छे चरवाहे के रूप में सभी आवश्यक चीजें प्रदान करते हैं। निष्कलंक कुँवारी मरिया की संगत में शामिल होने के संबंध में आर्चबिशप के शब्दों को सुनकर वे और उनकी सहेलियाँ बेहद खुश हुईं तथा आशा एवं खुशी से भरकर उन्होंने दिन, सप्ताह, महीने और साल गिनना शुरू कर दिया। वे लिखती हैं, ''उसी दिन से हमलोग दिनों की, हफ्ते, महीने और बरस की गिनती करती जाती थीं, यह कह–कहकर कि आठ बरस से इतने दिन बीत गए हैं और हमारे दिल का साहस उठाती रहीं।''[10] इस प्रकार, वे सदैव प्रभु में अपनी आशा की ज्योति प्रज्वलित रखीं।

3.3 प्रेम : येसु ख्रीस्त ने पुराने विधान की दस आज्ञाओं को एक नई आज्ञा में संक्षेपित किया, जैसा कि उन्होंने कहा, "अपने प्रभु–ईश्वर को अपने सारे हृदय, अपनी सारी आत्मा और अपनी सारी बुद्धि से प्यार करो। यह सबसे बड़ी और पहली आज्ञा है। दूसरी आज्ञा इसी के सदृश हैः अपने पड़ोसी को अपने समान प्यार करो।"[11] इस नई आज्ञा का पालन करते हुए, माता मेरी बेर्नादेत्त ने अपना पूरा जीवन ईश्वर के प्रेम और दूसरों के प्रेम के लिए समर्पित कर दिया। मूलभूत प्रेरणा में वे ईश्वर और उनके लोगों के प्रेम और सेवा के खातिर खुद को समर्पित करने के लिए प्रेरित हुई थीं। यह प्रेम उनकी इच्छा तक ही सीमित नहीं था बल्कि उनकी निःस्वार्थ सेवा में साकार रूप धारण कर लिया था। इसका एक बड़ा उदाहरण माता बेर्नादेत्त और उनकी सहेलियों द्वारा लोरेटो मादरों एवं मिशनरी पुरोहितों के साथ हैजा और अकाल पीड़ितों के लिए की गई प्रेमपूर्ण सेवा थी।[12]

एक अन्य उत्तम उदाहरण उनके पोस्टुलेंट बनने के दिन की प्रार्थना में देखा जा सकता है। "हे येसु... मैं तुझे अपना दिल दे देती हूँ कि तुझको नित प्यार करे। जितनी साँस मरने तक और मरते ही मुझे लेना है, सबको

---

10 संस्मरण, 41

11 मत्ती 22:37–39

12 संस्मरण, 42–43

CamScanner

मैं तुझे दे देती हूँ। जीने में भी, मर जाने में भी मैं तुझे अपने को दे देती हूँ कि युग–युग मैं तेरी ही रहूँ।"[13] एक गवाह ने माता बेर्नादेत्त के विषय में कहा है, "वे येसु का अनुसरण करने वाले हर व्यक्ति को प्रेरित करती हैं। उन्होंने उसे करीब से जाना, उससे गहराई से प्यार किया और निकटता से उसका अनुसरण किया।''[14]

13 संस्मरण, 49

14 B. Kispotta, *The Memoirs of Sr. Anna Mary Bernadette DSA Founder of the Congregation* (*Memoirs*), trans., Alex Ekka, Catholic Press Ranchi 2007, p. 69.

CamScanner

अध्याय 4

आधारभूत सद्गुण और माता मेरी बेर्नादेत्त

4.1 विवेक : दर्शनशास्त्र और खीस्तीय ईशशास्त्र दोनों में चार आधारभूत गुण (Cardinal Virtues) मन और चरित्र के गुण हैं। वे हैं– विवेक, न्याय, धैर्य और संयम। विवेक संभावित परिणामों पर विचार करते हुए, किसी भी स्थिति में उचित समय पर की जाने वाली उचित कार्रवाई को समझने की क्षमता है। यह गुण माता बेर्नादेत्त में बचपन से ही विद्यमान था। इसीलिए वे सच्चे धर्म को स्वयं पहचानने में पर्याप्त समय लेती हैं। वे अपनी शिक्षिका को बहुत विवेकपूर्वक उत्तर देती हैं, "मैं एक बार काथोलिक धर्म जानना चाहती हूँ। अगर वह असल धर्म है तो मैं निश्चय उसे ग्रहण करूँगी और फिर न लौटूँगी। अगर नहीं है तो तुरंत लौटूँगी। आपलोगों की प्रेमी शिक्षा और मेहनतों के लिए मैं सारे दिल से धन्यवाद देती हूँ।''[1] इसी तरह, मिशनरी येसु संघियों के विषय में वे स्वीकार करती हैं, "मैं तो खुद आप ही देखी और उनकी बातों को सुन चुकी हूँ। वे तो बहुत आदरणीय, कोमल, मधुर वचन के तथा सभों से अत्यंत मिलनसार सा जान पड़ते हैं। भला मैं धीरे–धीरे और विषयों पर देखभाल करती जाऊँगी जब तक कि इसका पूरा पता न पाऊँ।''[2] इस प्रकार वे केवल लोगों की सुनायी बातों पर विश्वास नहीं करतीं बल्कि तर्कसंगत रूप से सच्चाई की पहचान करती हैं।

सोने के गहनों वाली घटना में भी, माता बेर्नादेत्त ने बुजुर्ग महिला सलोमी को समझदारी से जवाब दिया, ''मैं आप, अभी तुरन्त उनके (अपने माता–पिता के) पास जाना ठीक नहीं समझती हूँ, क्योंकि मैं उनसे अभी कुछ बोलूँ, तो वे बहुत ही रूष्ट होंगे।"[3] और भी उनकी

1 संस्मरण, 21

2 संस्मरण, 18

3 संस्मरण, 10–11

CamScanner

बुद्धिमत्ता का एक अन्य उदाहरण रात में अकेली दो लाशों और एक बीमार लड़की की रखवाली करने की घटना में देखने को मिलता है। बहुत समझदारी से उन्होंने मेज से बत्ती ली और उसे दरवाजे के ठीक बीच में रखकर, बेर्नादेत्त सि. मेरी को बुलाने के लिए कॉन्वेंट की ओर दौड़ी।[4] इस प्रकार, उनकी अनुपस्थिति में गीदड़ लाशों और बीमार लड़की को नुकसान नहीं पहुँचा सके। भावी दूल्हे से हाथ मिलाने का आग्रह करने पर, माता बेर्नादेत्त ने उसके अनुरोध को अस्वीकार करते हुए विवेकपूर्ण ढंग से जवाब दिया, "वह साधारण तौर का सलाम है। परन्तु अभी जो आप लोग मुझसे कराते हैं यह फर्क निशानी का सलाम है।"[5] इस प्रकार, उनके पास यह जानने की बुद्धि थी कि कब बोलना है और कब चुप रहना है।

4.2 न्याय : न्याय को निष्पक्षता या धार्मिकता के रूप में समझा जाता है। माता बेर्नादेत्त के पिता पूरन प्रसाद राँची की अदालत में वकील की शक्ति के धारक थे, इसलिए वे कानूनी प्रणाली में पारंगत थे। वे फा. कॉन्स्टेंट लीवन्स, ये.सं. से भी जुड़े थे और समय–समय पर वे न्याय के लिए काम करने हेतु कुछ मुद्दों पर चर्चा करते थे। विशेष रूप से, उन्होंने गरीब लोगों को अन्यायी जमींदारों के चंगुल से मुक्त कराने का प्रयास किया। माता बेर्नादेत्त ने अपने पिता की गतिविधियों को देखा था और जाहिर तौर पर वे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उनके न्याय के कार्यों से प्रभावित थीं। परिणामस्वरूप, वे भी अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने के लिए साहसी बन गई थीं। उन्होंने छोटानागपुर के पीड़ित लोगों का दर्द महसूस किया था और इसलिए, लोरेटो मादरों से प्रेरित होकर उन्होंने अपना जीवन लोगों की सेवा में समर्पित करने का फैसला किया। वे एक क्राँतिकारी महिला थीं, जो अधिकार के लिए लड़ना जानती थीं। आखिरकार, जीवन की सभी बाधाओं को पार करते हुए, वे अपना सपना पूरा करने में सफल रहीं और विभिन्न प्रेरिताई के माध्यम से उन्होंने न्याय के लिए काम किया।

---

4 संस्मरण, 27

5 संस्मरण, 36

CS CamScanner

4.3 धैर्य : इसे साहस, धीरज, शक्ति, सहनशीलता और भय तथा अनिश्चितता का सामना करने की क्षमता भी कहा जाता है। माता बेर्नादेत्त एक साहसी महिला थीं और इसलिए उनमें सही काम करने की हिम्मत थी। उनकी जीवन यात्रा में विभिन्न प्रकार की चुनौतियाँ, अनिश्चितताएँ और कठिनाइयाँ आईं लेकिन उन्होंने उन सभी का अदम्य साहस के साथ सामना किया। आधी रात को अकेली दो लाशों और बीमार लड़की की रखवाली करना उनकी निर्भीकता को साबित करता है।[6] जब लोगों ने माता बेर्नादेत्त और उनकी सहेलियों पर झूठा आरोप लगाया, तो उन्होंने साहसपूर्वक उत्तर दिया, "यह निपट झूठ बात है। हमलोग तो किसी लड़के के साथ में बात नहीं की हैं न मुँह से और न चिट्ठी से। ऐसी नीच ... शादी की बात हमलोगों से कभी न हुई है और न होगी। जो हमलोगों को शादी करने माँगते हैं वे कौन और कहाँ के लोग हैं ? उन्हें यहाँ बुला लाइए, तो उन दगाबाजों का सुन्दर रूप रंग को थोड़ा देखेंगी तथा उन्हीं से पूछ लेंगी कि कब, कहाँ और कैसे बन्दोबस्त हुआ है।[7]

माता बेर्नादेत्त में बहुत सहनशक्ति थी। अपने लोगों की डाँट और धमकियाँ सुनने के बाद भी, वे येसु के खातिर अविवाहित रहने के अपने दृढ़ संकल्प पर अडिग थीं।[8] जो लड़का उनसे शादी करना चाहता था, उसे उन्होंने दृढ़ता से जवाब दिया, "मैं कभी न हाथ मिलाऊँगी। मैं आपकी कभी न होऊँगी सो जानिए। इसलिए मुझे ऐसे दिक् मत कर।"[9] परेशानी और थकान के समय भी वे शान्त रहीं और बड़े धैर्य से सब कुछ सहन करती रहीं। कॉन्वेंट में, उन्हें और उनकी सहेलियों को बहुत सारी जिम्मेदारियाँ दी गई थीं लेकिन उन्होंने उन्हें प्यार से निभाया, जैसा कि माता बेर्नादेत्त लिखती हैं,

> इन सब प्रकार के कामों को ठीक—ठीक कर पाने में हमें सदा सहज नहीं होता रहा। कभी—कभी बहुधा इस, उस से

6 संस्मरण, 27

7 संस्मरण, 29

8 संस्मरण, 34

9 संस्मरण, 36

CamScanner

दिक्, दुःख, दिल की घबड़ाहट और उदासी झेलनी पड़ी। लेकिन ईश्वर की कृपा के द्वारा तथा हमारे प्यारे पापसुनक पुरोहितगण जैसे रेव्ह. फा. सपार्ट एस.जे., रेव्ह. फा. हेगेनबीक एस.जे. और विशेष रूप से रेव्ह फा. डेसमेट एस.जे. की अगुवाई और मदद से हमलोगों को बल और दिलासा मिलने से स्थिर रह सकी हैं।[10]

उनके दैनिक जीवन और कार्यों में भी सहनशीलता देखी जा सकती थी। अपने जीवन के अंतिम दिनों में भी माता बेर्नादेत्त ने अपने सभी कष्टों और दुःखों को बहुत धैर्यपूर्वक सहन किया। उन्हें असहनीय दर्द हुआ लेकिन उन्होंने कभी शिकायत का एक शब्द भी नहीं कहा। वे कहती थीं, ''येसु की पीड़ा की तुलना में मेरी पीड़ा बहुत कम है।''[11]

4.4 संयम : इसे आत्मदमन, आत्म–नियंत्रण, परहेज, विवेक और संतुलन के अभ्यास के रूप में भी जाना जाता है। अन्य आधारभूत सद्गुणों की तरह, संयम का सद्गुण भी माता बेर्नादेत्त के जीवन में देखा जा सकता है। सोने के आभूषण पहनने से इनकार करके वे स्वयं को सांसारिक अभिरूचियों से दूर रखना चाहती थीं। उन्होंने ईश्वर को प्यार करने और संपूर्ण मानवता की सेवा करने के लिए पारिवारिक जीवन की खुशियों और सुखों का परित्याग कर दिया। वे अपने माता–पिता की अनुमति के बिना कहीं नहीं जाती थीं।[12] उनके चरित्र के ये सभी पहलू उनके आत्म–नियंत्रण और संयम को दर्शाते हैं।

10 संस्मरण, 41–42

11 B. Kispotta, *The Memoirs of Sr. Anna Mary Bernadette DSA Founder of the Congregation* (*Memoirs*), trans., Alex Ekka, Catholic Press Ranchi 2007, p. 69.

12 संस्मरण, 44

CS CamScanner

हे यीसु, मेरे छोटे चढ़ावे को मंजूर कर। तूने मुझे अपने को सौंप दिया है। मैं तुझे अपने को सौंप देने पाऊँ। मैं तुझे अपना बदन दे देती हूँ, कि साफ निर्मल रहे। मैं तुझे अपना आत्मा दे देती हूँ कि पाप से अलग होवे। मैं तुझे अपना दिल दे देती हूँ कि तुझ को नित प्यार करे। जितनी साँस, मरने तक और मरते ही मुझे लेना है, सब को मैं तुझे दे देती हूँ। जीने में भी, मर जाने में भी, मैं तुझे अपने को दे देती हूँ, कि युग-युग मैं तेरी ही रहूँ।

संस्मरण, पृष्ठ सं. 48-49

CamScanner

CamScanner